04 - चिराग पासवान की वापसी का बिहार राजनीति पर असर

05 - महिला सुरक्षा और मीठी- मीठी बातें

A Daily News Magazine
भोपाल
बुधवार, 4 जून, 2025

06 - बालिका की मौत के 17 दिन बाद भी बंगाली डॉक्टर पर नहीं हुई कार्यवाही

07 - प्रदेश में इस माह तीन अनुसूचित जनजाति सम्मेलन होंगे...

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 265, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

भारत का किशोर और युवा : तरुणाई, हारमोंस और उदारवादी सोच

एन.के. सिंह

सुप्रीम कोर्ट केंद्र सरकार को राज्यों के साथ मिलकर किशोरावस्था के लोगों के लिए सेक्स एजुकेशन नीति बनाने की राय दी है। स्तंभकार एनके सिंह ने इस मुद्दे को समझाने की कोशिश की है। आप भी समझिए:

देश की सर्वोच्च अदालत -सुप्रीम कोर्ट: इन दिनों एक नये कानूनी-सामाजिक पेंच में उलझी है। दरअसल कोर्ट इस मुद्दे पर गौर कर रही है कि निर्भया काण्ड के बाद बने पोक्सो कानून में 16 और 18 वर्ष के बीच की आयु की किशोरावस्था में होने वाले हार्मोनल और बायोलाजिकल चेंजेज को ध्यान में नहीं रखा गया, लिहाज़ा इस उम्र में शारीरिक संबधों को भले हीं वे सहमति से हों, आरोपी का एकतरफा आपराधिक कृत्य मान लिया गया। कोर्ट में जब कुछ वकीलों ने इस मुद्दे को उठाया तो कोर्ट ने केंद्र सरकार को इस पर गौर करने और समिति बना कर दो माह में रिपोर्ट देने को कहा है।

कोर्ट की बेंच ने तमाम हाई कोर्ट्स की चिंता और तज्जनित फैसलों को कोट करते हुए कहा कि ऐसे बच्चों को पैरेंट्स और समाज के गाइडेंस और उदार रुख की जरूरत है। कोर्ट के अनुसार प्यार और उसके बांड्स प्राकृतिक उदगार हैं और इसके अपराधीकरण से किशोर अपराधियों की भरमार हो जायेगी। उचित शिक्षा और मनोवैज्ञानिक सलाह दे कर इस स्थिति से बचा जा सकता है। कोर्ट ने सरकार को राज्यों के साथ मिलकर किशोरावस्था के लोगों के लिए सेक्स एजुकेशन नीति बनाने की राय दी है।

यहाँ प्रश्न यह भी है कि इस कानून से पहले सहमति आधारित शरीरिक संबंध की आयु पहले 16 वर्ष थी, जिसे पोक्सो कानून में 18 वर्ष कर दिया गया। चूंकि भारत में पहले की अपेक्षा खान-पान की स्थिति बेहतर हुई है लिहाज़ा हार्मोनल और बायोलॉजिकल बदलाव भी जल्द होने लगे हैं। ऐसे में सहमति-आधारित शारीरिक संबंध की उम्र बढ़ाना वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी गलत था। दरअसल शिक्षा के प्रसार और को-एजुकेशन के कारण इस वय के लोगों में आपसी नजदीकियां कुछ दशक पहले के मुकाबले बढ़ी हैं। लिहाज़ा समाज और कानून को उनकी 'गलतियों' को आपराधिक कृत्य के रूप में न लेकर अलग नज़रों से देखना ज़रूरी हो गया है। हाँ, इन्हें स्वछंदता देना लम्पटता को जन्म दे सकता है लिहाज़ा नैतिक शिक्षा के साथ सामाजिक नियंत्रण भी उतना ही जरूरी है वरना स्थिति यूरोप जैसी हो सकती है, जहां तरुण-एबॉर्शन एक बड़ी चुनौती बन गयी है।

उदारवादी सोच की समस्या: उदारवादी सोच एक क्रमिक सकारात्मक सामाजिक चिंतन का परिणाम है। लेकिन यह काल- और स्थिति-सापेक्ष होता है। भारत जैसे समाज में जहां के अधिकांश वर्गों में आज भी दहेज के लिए बहुओं की और लिंग जान कर बालिकाओं की गर्भ में हीं भ्रूण हत्या की जाती हो, गरीबी में बेटियाँ बेची जाती हों और स्त्री को भोग से अधिक कुछ नहीं समझा जाता हो, पाश्चात्य सभ्यता वाली 'वीमेन लिबर्टी' के पैमाने लागू करने पर निर्भया काण्ड होने का डर बना रहता है।

इस देश में सख्त कानून आपराधिक कृत्यों का 'एंटीडोट' नहीं बन पाया है, बल्कि जेल जाने के बाद सजायाफ्ता (या विचाराधीन कैदी) की आपराधिक क्षमता के आयाम में वृद्धि हो जाती है। 'इंडिया इंटरनेशनल सेंटर' के अभिजात्य वर्ग में आज भी माना जाता है कि महिला कैसे भी कपड़े पहने, या सार्वजानिक रूप से शराब पीये, यह उसकी निजी आजादी है।

लेकिन इस अवधारणा के पोषक भूल जाते हैं कि अर्धनग्न नशे की अवस्था में जब वह घर जाने के लिए ओला/उबर करती है तो ड्राइवर वह होता है, जो गाँव से तीन महीने पहले आया है और उसे 'गाँव के बुद्धिमान साथियों' ने बताया है कि शहरों में ऐसी महिलायें 'ठीक चरित्र' की नहीं होतीं। और तब निर्भया काण्ड हो जाता है। उसके बाद देश की सामूहिक चेतना इतनी उद्वेलित हुई कि पोक्सो जैसा सख्त कानून बन जाता है। यह अलग बात है कि कानून बनने के 12 साल बाद भी हर रोज निर्भया से ज्यादा वीभत्स काण्ड की खबरें अखबारों में देखने को मिलती हैं।

दरअसल पश्चिमी उदारवाद के पैरामीटर्स वहाँ इसलिए सफल हैं कि महिलाओं का समाज के सभी कार्यों में हिस्सा लेना आम बात है। आदतन महिलाओं को सम्मान की नजरों से देखा जाता है न कि भोग के भाव से। कानून का शिकंजा बेहद मजबूत और सक्षम है। सेक्स को लेकर छिपाव और ढकाव का भाव नहीं रहा है। लो-अल्कोहल वाले शराब का सेवन ज्यादा प्रचलित है।

लिहाज़ा जब इन पैरामीटर्स को भारत में चस्पा करते हैं तो वे फेल हो जाते हैं, क्योंकि व्यक्ति आदतन कानून को ठेंगा दिखाता है - एक अदने सिपाही के न रहने पर रेड लाइट जम्प करना, चालान कटने पर सिपाही को 500 रुपये पकड़ा कर विजयी भाव से निकल जाना और फिर अपने मित्रों को यह बात बताना।

मोबाइल पर पोर्न वीडियो 15-18 साल के युवाओं/युवतियों को उद्वेलित करता है। को-एजुकेशन उत्प्रेरक का कार्य करता है। किशोरी जब किसी किशोर के साथ इस अवस्था में होती है तो वह भूल जाती है कि उसका साथी वीडियो बना कर उसे आजीवन ब्लैकमेल भी कर सकता है। अगर 15-17 साल का किशोर किसी किशोरी के साथ कई बार सहमति से शारीरिक संबंध बनाता है और फिर उसी वय के अन्य किशोर भी यही काम करते हैं तो 'इसे प्री-मेडीटेटेड, सस्टेन्ड कंडक्ट बाई अ क्रिमनल माइंड' (पूर्वनियोजित लगातार आपराधिक मनस से किया कृत्य) से कम कुछ भी नहीं कहा जा सकता।

फिर उदारवादी सोच के प्रवक्ता या सुप्रीम कोर्ट यह न भूले कि खानपान से शारीरिक और मोबाइल में उपलब्ध 'ज्ञान' से मानसिक परिपक्वता जल्दी आती है। पढ़ने की उम्र में वह भावनात्मक बांड जो 16-18 साल के बच्चों को शारीरिक संबंध के लिए उकसाए, अपराध और समसामयिक सामाजिक मूल्यों के बीच की स्थिति है। इसे मात्र उदारवादी चश्मे से देखने के अपने खतरे हैं।

यह भी न भूलें कि नए दौर के भारत में मूल्यों को बाल-मनस में इम्प्लांट करने वाली संस्थाएं - मां की गोद और समर्पित 'मास्साब' की जगह आया-नैनी और आयोग से आये 'टीचर्स' ने ले रखी है। अब बच्चों को नानी की 'एक राजा था' की मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता वाली कहानियाँ नहीं मिलती।

(सत्य हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

कच्छ में बॉर्डर के पास बनेगा 'ऑपरेशन सिंदूर' मेमोरियल पार्क

बहुत बड़ा है प्लान, गुजरात सरकार ने बताया 'एकता का प्रतीक'

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत सरकार ने पाकिस्तान में आतंकियों को समाप्त करने के लिए ऑपरेशन संदूर चलाया था, जो कि सफल रहा। अब गुजरात सरकार ने कच्छ में ऑपरेशन सिंदूर को समर्पित एक स्मारक बनाने का प्लान तैयार किया है। इसको लेकर एक अंग्रेजी अखबार से बातचीत में अधिकारियों ने बताया कि यह पार्क सुरक्षा बलों के प्रति सम्मान के साथ ही राष्ट्र द्वारा प्रदर्शित एकता को भी प्रतिबिंबित करेगा। गुजरात सरकार द्वारा प्लान किए गए इस पार्क का नाम 'सिंदूर वन' के तौर पर जाएगा। भारत-पाकिस्तान सीमा पर कच्छ जिले में बनाया जाएगा, जिसने दूसरी तरफ से गुजरात में हमलों का खामियाजा भुगता है। अधिकारियों ने बताया कि स्मारक के करीब डेढ़ साल में बनकर तैयार होने की उम्मीद है। साथ ही उन्होंने बताया कि जमीन पर शुरुआती काम शुरू हो चुका है। कच्छ के कलेक्टर आनंद पटेल ने बताया कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान समाज, सेना, वायु सेना, बीएसएफ और अन्य बलों द्वारा प्रदर्शित एकता की याद में वन विभाग द्वारा सिंदूर वन एक स्मारक पार्क की योजना बनाई जा रही है। ऑपरेशन सिंदूर के लिए बनने

वाला सिंदूर वन भुज-मांडवी मार्ग पर मिर्जापुर में वन विभाग की आठ हेक्टेयर भूमि पर बनाया जाएगा। कलेक्टर पटेल ने बताया कि इस भूमि में वह हिस्सा भी शामिल है, जहां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ऑपरेशन सिंदूर के बाद गुजरात की अपनी पहली यात्रा के दौरान एक सार्वजनिक बैठक की थी। 26 मई की जनसभा के दौरान प्रधानमंत्री को माधापार की महिलाओं ने 'सिंदूर का पौधा' भेंट किया था, जिन्होंने 1971 के युद्ध के दौरान भुज एयर बेस रनवे को 72 घंटों के भीतर ठीक करने में मदद की थी। अपने संबोधन में मोदी ने कहा था कि वह इस पौधे को पीएम हाउस ले जाएंगे, जहां यह 'वटवृक्ष' बन जाएगा। कच्छ सर्कल के मुख्य वन संरक्षक संदीप कुमार ने कहा कि सिंदूर वन, ऑपरेशन सिंदूर पर आधारित एक थीम आधारित स्मारक पार्क होगा।

सुप्रभात

दो नावों पर पाँव पसारे, ऐसे कैसे
वो भी प्यारा, हम भी प्यारे, ऐसे कैसे

सूरज बोला बिन मेरे दुनिया अंधी है
हँस कर बोले चाँद सितारे, ऐसे कैसे

रंग साँवला कितनों को भाएगा तेरा
झटक के गीले बाल सँवारे, ऐसे कैसे

तेरे हिस्से की खुशियों से बैर नहीं पर
मेरे हक़ में सिर्फ ख़सारे, ऐसे कैसे

गालों पर बोसा दे कर जब चली गई वो
कहते रह गए होंठ बिचारे, ऐसे कैसे

मुझ जैसों को यां पर देख के कहते हैं वो
इतना आगे, बिना सहारे, ऐसे कैसे

जैसे ही मक़्ते पर पहुँची ग़ज़ल
'असद' की
बोल उठे सारे के सारे, ऐसे कैसे।

-वैभव असद अकबराबादी

मोहन कैबिनेट का फैसला

राजा भभूत सिंह के नाम होगा पचमढ़ी वन्य जीव अभयारण्य

भोपाल/पचमढ़ी (नप्र)। मध्यप्रदेश के पचमढ़ी में हुई मोहन यादव कैबिनेट की बैठक में बड़ा फैसला लिया गया है। पचमढ़ी वन्य जीव अभ्यारण का नाम राजा भभूत सिंह के नाम पर करने का निर्णय लिया गया है। नगरीय विकास मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने कैबिनेट बैठक के फैसलों की जानकारी देते हुए बताया कि राजा भभूत सिंह की कर्म भूमि, जन्म भूमि पर कैबिनेट की हुई है। उन्होंने मक्खियों से अंग्रेजों को भगाने का काम किया। वे नर्मदा अंचल के शिवाजी कहलाते थे।

इससे पहले पचमढ़ी के राजभवन में राजा भभूत सिंह की स्मृति एवं जनजातीय समाज के कल्याण को समर्पित कैबिनेट बैठक पचमढ़ी में राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम के गायन के साथ शुरू हुई।

सीएम बोले- राजा भभूत सिंह का इतिहास वीरता भरा रहा

सोमवार को मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि राजा भभूत सिंह ने स्वतंत्रता संग्राम के समय महान स्वतंत्रता सेनानी तात्या टोपे की मदद की थी। तात्या टोपे के आह्वान पर उन्होंने सतपुड़ा की वादियों में आजादी की मशाल जलाई। राजा भभूत सिंह ने अंग्रेजों की आंख में धूल झोंकते हुए अक्टूबर 1858 के अंतिम सप्ताह में तात्या टोपे के साथ ऋषि शांडिल्य की पौराणिक तपोभूमि सांडिया के पास नर्मदा नदी पार की।

सीएम ने कहा- भभूत सिंह और तात्या टोपे ने नर्मदांचल में आजादी के आंदोलन की योजना बनाई।

कैबिनेट की बैठक में ये फैसले हुए

- 5 जून को उज्जैन में वेलनेस समिट का आयोजन किया जाएगा।
- 9 जून को पीएम मोदी के कार्यकाल के 11 साल पूरे होंगे। इसको लेकर कार्यक्रम किए जाएंगे।
- राजस्व विभाग में 500 पदों को खत्म कर 1200 पदों का सृजन करने का फैसला किया गया है। इसमें आईटी के पदों को ज्यादा महत्व दिया जाएगा। जिससे कि समस्या के तुरंत समाधान हों।
- राजस्व विभाग में प्रमुख राजस्व आयुक्त और आयुक्त अभिलेख को आपस में मर्ज किया गया है। नया पद कमिश्नर लैंड रिसॉर्स मैनेजमेंट के नाम से होगा।
- श्रम विभाग में संशोधन को भी कैबिनेट ने मंजूरी दी है। जहां महिलाएं सुरक्षित तरीके से रात में काम कर सकती हैं, वहां पर काम कर सकती हैं। इसके लिए नियमों में संशोधन किया जाएगा। किसी का शोषण नहीं हो, इसे ध्यान रखा जाएगा। ठेका श्रमिक नियमों में भी बदलाव किया जाएगा। लेबर एक्ट में संशोधन को मंजूरी दी गई है।

राहुल गांधी ने भोपाल मप्र में संगठन सृजन अभियान की शुरुआत की

ट्रंप के फोन पर नरेंद्र मोदी ने किया 'सीजफायर': राहुल गांधी

भोपाल (नप्र)। राहुल गांधी ने मंगलवार को भोपाल में कहा- ट्रम्प का एक फोन आया और नरेंद्र जी तुरंत सरेंडर हो गए और सीजफायर कर दिया। इतिहास गवाह है, यही भाजपा-आरएसएस का कैरेक्टर है। ये हमेशा झुकते हैं। भारत ने 1971 में अमेरिका की धमकी के बावजूद पाकिस्तान को तोड़ा था। कांग्रेस के बब्बर शेर और शेरनियां सुपर पावर से लड़ते हैं, कभी झुकते नहीं हैं। ऑपरेशन सिंदूर को लेकर कहा कि नरेंद्र मोदी ने अमेरिका के कहने पर युद्धविराम की घोषणा कर दी। भारत के इतिहास में ऐसा कभी नहीं हुआ।

इससे पहले राहुल गांधी ने मध्यप्रदेश में संगठन सृजन अभियान की शुरुआत की। प्रदेश में यह अभियान 10 जून से शुरू होकर 30 जून तक चलेगा। इसके लिए कांग्रेस ने आब्जर्वरों को एक-एक जिले की जिम्मेदारी सौंपी है।राहुल ने 6 घंटे में चार अलग-अलग बैठकें की। रविंद्र भवन में ब्लॉक-जिला अध्यक्षों को संबोधित करते हुए उन्होंने संगठन को मजबूत बनाने की बात कही। राहुल गांधी ने कांग्रेस विधायक दल की बैठक में विधायकों से वन टू वन बात की।

राहुल ने कार्यकर्ताओं से कहा- हमें रेस का घोड़ा बनना है - तीन तरह के घोड़े होते हैं। रेस वाला, बारात वाला और लंगड़ा घोड़ा। रेस वाला घोड़ा दौड़कर आगे बढ़ जाता है। बारात वाला घोड़ा, बारात तक ही चल पाता है। तीसरा घोड़ा लंगड़ा होता है जो किसी काम का नहीं होता। हमें रेस वाला घोड़ा बनना है। दौड़कर आगे जाना है।

चुनाव में टिकट के लिए संगठन की राय सर्वोपरि- राहुल गांधी ने ब्लॉक और जिला स्तर पर कांग्रेस कमेटियों को मजबूत बनाने की बात कही। उन्होंने कहा कि नई पीढ़ी को भी मौका दिया जाएगा। लोकसभा-विधानसभा चुनाव में टिकट के लिए संगठन की महत्व दिया जाएगा। संगठन जिसका नाम आगे बढ़ाएगा, उसे चुनाव लड़वाया जाएगा। इससे पहले उन्होंने कांग्रेस मुख्यालय में पार्टी की पॉलिटिकल अफेयर्स कमेटी और उसके बाद विधायकों की बैठक ली थी।

महाराष्ट्र में बच्चों को पहली कक्षा से दी जाएगी मिलिट्री ट्रेनिंग

देशभक्ति और अनुशासन के लिए फणनवीस सरकार की पहल

मुंबई (एजेंसी)। हाल ही भारत और पाकिस्तान के बीच बढ़े तनाव के बाद अब महाराष्ट्र में बच्चों को पहली कक्षा से ही मिलिट्री ट्रेनिंग देने की योजना बनाई गई है। हाल ही में महाराष्ट्र के स्कूली शिक्षा मंत्री दादा भुसे ने घोषणा की है कि बच्चों में देशभक्ति की भावना और और अनुशासन और नियमित शारीरिक व्यायाम की आदत को बढ़ावा देने के लिए महाराष्ट्र में कक्षा 1 से ही छात्रों को बुनियादी सैन्य प्रशिक्षण दिया जाएगा। महाराष्ट्र के शिक्षा मंत्री ने यह भी बताया है कि बच्चों को प्रशिक्षण देने के लिए सेवानिवृत्त सैनिकों की मदद ली जाएगी। इस दौरान भुसे ने कहा, छात्रों को कक्षा 1 से बुनियादी सैन्य प्रशिक्षण देने का निर्णय लिया गया है। इससे देश के प्रति प्रेम पैदा करने में मदद मिलेगी और छात्रों को इससे बेहद फायदा होगा। शिवसेना नेता ने कहा कि

प्रस्ताव को लागू करने के लिए स्पोर्ट्स टीच, राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी), स्काउट्स और गाइड्स के साथ 2.5 लाख पूर्व सैनिकों की मदद ली जाएगी। जानकारी के मुताबिक राज्य के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने भी प्रस्ताव पर सकारात्मक प्रतिक्रिया दी है। मंत्री भूसे ने बताया कि इस पहल के तहत छात्रों को सैन्य अनुशासन, व्यायाम और राष्ट्रसेवा की भावना से जोड़ा जाएगा। प्रशिक्षण के लिए सेवानिवृत्त सैनिकों की सेवाएं ली जाएंगी, ताकि बच्चों को सही मार्गदर्शन और प्रेरणा मिल सके। भुसे ने कहा, कक्षा 1 से छात्रों को बुनियादी स्तर की सैन्य ट्रेनिंग देने का निर्णय लिया गया है। इससे छात्रों में देश के प्रति प्रेम पैदा होगा, नियमित रूप से शारीरिक व्यायाम करने और अनुशासन जैसी आदतों को बढ़ावा मिलेगा, जिससे छात्रों को लाभ होगा। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने प्रस्ताव पर सकारात्मक प्रतिक्रिया दी है। शिवसेना मंत्री ने कहा कि प्रस्ताव को लागू करने के लिए खेल शिक्षकों,राष्ट्रीय कैडेट कोर, स्काउट और गाइड के साथ बात की जाएगी।

पाक के लिए जासूसी के शक में पंजाब से हो गई गिरफ्तारी

- ऑपरेशन सिंदूर की जानकारियां भेज रहा था, मोबाइल में आईएसआई एजेंटों के नंबर

तरनतारन (एजेंसी)। पाकिस्तान के लिए जासूसी करने के शक में पंजाब के तरनतारन से एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया है। आरोप है कि वह ऑपरेशन सिंदूर से जुड़ी सैन्य जानकारियां पाकिस्तानी खुफिया एजेसी आईएसआई को भेज रहा था। आरोपी की पहचान तरनतारन के मोहल्ला रोडूपुर गली नजर सिंह वाली के गगनदीप सिंह उर्फ गगन के रूप में हुई है। यह कार्रवाई पंजाब पुलिस की काउंटर इंटेलीजेंस यूनिट और तरनतारन पुलिस ने की है। डीआईजी गौरव यादव के अनुसार, प्रारंभिक जांच में पता चला है कि गगनदीप सिंह 5 साल से पाकिस्तान में बैठे खालिस्तान समर्थक गोपाल सिंह चावला के संपर्क में था।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 38 °c

न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ बुधवार, 4 जून 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

ऑपरेशन सिंदूर पर 'इंडिया' की बैठक, 16 दल शामिल

प्रधानमंत्री से की संसद का विशेष सत्र बुलाने की मांग

नई दिल्ली (एजेंसी)। ऑपरेशन सिंदूर पर संसद का विशेष सत्र बुलाने के लिए इंडिया ब्लॉक की मंगलवार को नई दिल्ली में बैठक हुई। इसमें 16 विपक्षी पार्टियों ने हिस्सा लिया। टीएमसी सांसद डेरेक ओ ब्रायन ने जानकारी दी कि सभी दलों ने पीएम को पत्र लिखकर संसद का विशेष सत्र बुलाने की मांग की गई है। आम आदमी पार्टी मीटिंग में शामिल नहीं हुई। डेरेक ने बताया कि एएपी बुधवार को प्रधानमंत्री को अलग से चिट्ठी भेजेगी। बैठक में कांग्रेस, समाजवादी पार्टी, तृणमूल कांग्रेस, द्रविड़ मुनेत्र कड़गम, शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे), राष्ट्रीय जनता दल, जम्मू-कश्मीर नेशनल कॉन्फ्रेंस, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी), इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी, रिवोल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी, जेएमएम, विदुथलाई चिरुथैगल काची, केरल कांग्रेस, मरुमलार्ची द्रविड़ मुनेत्र कड़गम और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) लिबरेशन शामिल हुई।

पूर्वोत्तर में बारिश-बाढ़ से हर ओर 'हाहाकार'

● असम में बाढ़ से बिगड़ गए हालात, 5.5 लाख लोग फंसे ● मरने वालों की संख्या 40 पार पहुंची, 15 नदियां उफान पर

गुवाहाटी/गंगटोक (एजेंसी)। पूर्वोत्तर के कई राज्यों में बारिश ने कहर बरपाया है। बारिश, बाढ़ और भूस्खलन की वजह से लाखों लोगों की परेशानी और बढ़ गई है। करीब 40 मौत हो चुकी हैं। असम में ही 22 जिलों में 5.35 लाख से अधिक लोग प्रभावित हुए हैं, जबकि एक व्यक्ति की मौत हो जाने से मरने वालों की संख्या बढ़कर 11 हो गई। बयान के अनुसार, असम में 15 नदियां उफान पर हैं। उधर, मणिपुर, त्रिपुरा, मिजोरम, मेघालय, सिक्किम आदि राज्यों में भी हालात खराब हैं। सेना और अन्य एजेंसियों के हजारों कर्मी बचाव और राहत के कामों में जुटे हैं। भूस्खलन की वजह से बंद रास्तों और खराब मौसम के बीच कई जगह बचाव और राहत के कार्यों में दिक्कतें भी आ रही हैं। असम में बाढ़ की स्थिति गंभीर बनी हुई है। मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने सबसे अधिक प्रभावित क्षेत्रों में से एक लखीमपुर जिले का दौरा किया और प्रभावित लोगों को हर संभव सहायता का आश्वासन दिया। सरमा ने जिले के बाढ़ प्रभावित इलाकों खासकर उन जगहों का दौरा किया जो अरुणाचल प्रदेश के ऊपरी हिस्से में रंगनदी बांध से छोड़े गए पानी से

जलमग्न हो गए हैं। स्थानीय लोगों से मुलाकात के बाद पत्रकारों से बात करते हुए सरमा ने कहा कि अमतोला क्षेत्र में पचनोई नदी का तटबंध टूट गया है, जिससे कई गांवों को भारी नुकसान पहुंचा है। गुवाहाटी स्थित क्षेत्रीय मौसम विज्ञान केंद्र ने कहा है कि असम के अधिकतर स्थानों पर मध्यम वर्षा होने की संभावना है, जबकि कुछ स्थानों पर भारी से बहुत भारी बारिश और कुछ स्थानों पर अत्यधिक भारी बारिश होने का अनुमान है। राज्य के कई इलाकों में भारी बारिश के कारण सड़क मार्ग, रेल परिवहन और नौका सेवाएं प्रभावित रहीं। असम राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एएसडीएमए) के बुलेटिन में कहा गया है कि 22 जिलों के 65 राजस्व क्षेत्रों और 1,254 गांवों के 5,15,039 लोग बाढ़ से प्रभावित हुए हैं।

'ऑपरेशन सिंदूर' के बाद पहली कैबिनेट मीटिंग आज

● पीएम मोदी की अध्यक्षता में हो सकते हैं अहम फैसले

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी बुधवार को केंद्रीय मंत्रिपरिषद की बैठक की अध्यक्षता करेंगे, जो पहलगाम आतंकवादी हमले और उसके जवाब में चलाए गए 'ऑपरेशन सिंदूर' के बाद मंत्रिपरिषद की पहली बैठक होगी। अधिकारियों ने सोमवार को यह जानकारी दी। यह बैठक ऐसे समय में आयोजित की जा रही है, जब प्रधानमंत्री मोदी नीत केंद्र सरकार अपने तीसरे कार्यकाल के एक साल पूरे करने जा रही है। माना जा रहा है कि इस बैठक में कई अहम फैसले लिए जा सकते हैं। सूत्रों ने सोमवार को बताया कि बैठक में मंत्रियों को 'ऑपरेशन सिंदूर' का ब्योरा दिए जाने की संभावना है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी नीत केंद्र सरकार के तीसरे कार्यकाल के एक साल पूरे होने के मौके पर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की ओर से अगले हफ्ते शुरू किए जाने वाले कार्यक्रमों में भी इस अभियान का जिक्र किए जाने की उम्मीद है। सूत्रों

के मुताबिक, मंत्रिपरिषद की बैठक में प्रधानमंत्री 'ऑपरेशन सिंदूर' पर बोलने के अलावा इस बात पर प्रकाश डाल सकते हैं कि उनकी सरकार का समग्र जोर किन चीजों पर है, क्योंकि मंत्री सरकार के एक साल पूरे होने के मौके पर देशभर में आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों में लोगों के बीच जाने को तैयार हैं। 'ऑपरेशन सिंदूर' के तहत पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) में नौ आतंकवादी ठिकानों पर भारतीय सशस्त्र बलों की ओर से किए गए सटीक हवाई हमले और उसके बाद पाकिस्तान के हमलों के जवाब में पड़ोसी देश के सैन्य प्रतिष्ठानों, खासकर वायुसैनिक ठिकानों पर किए गए भारतीय हमले प्रधानमंत्री मोदी के हालिया भाषणों का मुख्य बिंदु रहे हैं। प्रधानमंत्री ने कहा है कि 'ऑपरेशन सिंदूर' आतंकवादी कृत्यों में पाकिस्तान की भूमिका का जवाब देने के लिए भारत के नये रुख को रेखांकित करता है। उन्होंने भविष्य में भारतीय धरती पर किसी भी आतंकवादी घटना की स्थिति में आतंकवादियों और उनके प्रायोजकों के खिलाफ कठोरतम कार्रवाई करने का संकल्प जताया है।

भारत का 'कुश' हर हमले को कर सकेगा ट्रैक और ध्वस्त!

● कमाल का होगा स्वदेशी एयर डिफेंस सिस्टम, 2029 तक होगा तैयार ● डीआरडीओ की है बड़ी तैयारी, रूसी एस-400 को भी देगा टक्कर ● इजरायली आयरन डोम और अमेरिकी पैट्रियट पर पड़ सकता है भारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत का एक प्रोजेक्ट है कुश, जिसे विस्तारित रेंज एयर डिफेंस सिस्टम भी कहा जाता है। यह रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन की ओर से विकसित भारत का एक स्वदेशी एयर डिफेंस सिस्टम है। इसका मकसद एक लंबी दूरी की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल प्रणाली तैयार करना है जो ड्रोन, विमान और मिसाइल जैसे हवाई खतरों से निपट सके। वैसे तो भारत के पास रूस से मंगाए गए एस-400 डिफेंस सिस्टम भी है, मगर अब जिस तरह से युद्ध लड़े जा रहे हैं, उसमें किसी भी देश को हर वक्त तैयार रहना होगा। दूसरे देशों पर निर्भरता कम करनी होगी।

सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइलें

प्रोजेक्ट कुश के केंद्र में भारत की अपनी खुद की लंबी दूरी की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइलों का विकास है, जो रूस के एस-400 ट्रायम्फ एयर डिफेंस सिस्टम के बराबर है। इजरायल के प्रमुख एयरोस्पेस और एविएशन निर्माताओं, इज़राइल एयरोस्पेस इंडस्ट्रीज के साथ संयुक्त रूप से विकसित, कुश को मई 2022 में सुरक्षा के लिए कैबिनेट समिति द्वारा हरी झंडी दी गई थी। मोबाइल एलआर-एसएएम में लंबी दूरी की निगरानी और अग्नि नियंत्रण रडार के साथ विभिन्न प्रकार की इंटरसेप्टर मिसाइलें होंगी, जो 150 किमी, 250 किमी और 350 किमी की दूरी पर शत्रुतापूर्ण लक्ष्यों को मारने के लिए डिजाइन की गई हैं।

2029 तक देश की सीमाओं का बनेगा रखवाला

भारत का कुश एयर डिफेंस सिस्टम को 2028-2029 तक देश की सीमाओं पर तैनात करने की योजना है। यह दुश्मन के हमलों के साथ-साथ, दुश्मन के लड़ाकू विमान, ड्रोन, क्रूज और बैलेस्टिक मिसाइलों समेत हर हमलों को भी ट्रैक और ध्वस्त कर सकेगा। कुश के तैनात होने के बाद भारत उन महत्वपूर्ण देशों की सूची में शामिल हो जाएगा, जिनके पास अपना लंबी दूरी का एयर डिफेंस सिस्टम है। अभी भारत के पास अपना स्वदेशी वेरी-शॉर्ट रेंज एयर डिफेंस सिस्टम है। भारत ने 2018 में रूस से एस-400 की डील की थी, इस डील के तहत भारत ने 5 ऐसे एस-400, 40 हजार करोड़ रुपए में खरीदा था। इनमें से ज्यादातर चीनी सीमा पर तैनात हैं। कुश डिफेंस सिस्टम में ड्यूल-पल्स मोटर और थ्रस्ट वेक्टर कंट्रोल जैसे नवीनतम तकनीक शामिल हैं। यह सिस्टम उच्च सटीकता के साथ लक्ष्यों को निशाना बना सकता है, जिससे दुश्मन को आसानी से मात दी जा सके। इसकी एक और खास बात यह है कि यह प्रणाली भारत में है।

भारत की राष्ट्रीय भाषा है एकता और विविधता

● कनिमोझी बोलीं-यही संदेश हमारा डेलिगेशन दुनिया को देने आया है

मैड्रिड (एजेंसी)। भारत के ऑल पार्टी डेलिगेशन की अगुआई कर रहीं डीएमके सांसद कनिमोझी ने सोमवार को स्पेन में कहा कि भारत की राष्ट्रीय भाषा एकता और विविधता है। उन्होंने कहा कि यही संदेश यह प्रतिनिधिमंडल दुनिया को देने आया है। दरअसल, स्पेन में भारतीय समुदाय को संबोधित करते हुए उनसे पूछा गया कि भारत की राष्ट्रीय भाषा क्या है। इसके जवाब में कनिमोझी ने

कहा, भारत की राष्ट्रीय भाषा है एकता और विविधता। यही सबसे जरूरी संदेश है जो आज दुनिया तक पहुंचाना चाहिए। कनिमोझी का यह बयान ऐसे समय में आया है जब हाल ही में डीएमके केंद्र सरकार की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शामिल तीन-भाषा फॉर्मूले का विरोध कर चुकी है। स्पेन में कनिमोझी के नेतृत्व में भारत का 'ग्रुप-6' डेलिगेशन स्पेन के विदेश मंत्री जोसे मैनुएल अल्बारेस से भी मिला। स्पेन में भारतीय दूतावास ने जानकारी दी कि इस मुलाकात में आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई पर बात हुई।

राज्यपाल ने तमिलनाडु सरकार के दो बड़े बिलों को दे दी मंजूरी

सीएम स्टालिन बोले-गवर्नर सुप्रीम कोर्ट से डर गए हैं

सर्वोच्चा न्यायालय ने बिल रोकने को बताया था अवैध

चेन्नई (एजेंसी)। तमिलनाडु के राज्यपाल आरएन रवि ने सरकार की ओर से पारित 2 बिलों को मंजूरी दे दी है। इनसे 12,000 से ज्यादा दिव्यांगजनों को शहरी और स्थानीय निकायों में नामांकन का अधिकार मिलेगा। ये बिल लंबे समय से राजभवन में लंबित थे। राज्यपाल के इस फैसले पर मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने कहा- यह मंजूरी मिलनी ही थी। राज्यपाल को डर था कि अगर फिर से बिलों को रोका तो हम सुप्रीम कोर्ट चले जाएंगे। 8 अप्रैल को सुप्रीम कोर्ट ने तमिलनाडु गवर्नर और राज्य सरकार के मामले पर राज्यपाल के अधिकार की सीमा तय कर दी थी। बेंच ने कहा था- राज्यपाल के पास कोई वीटो पावर नहीं है। साथ ही सरकार के 10 जरूरी बिलों को राज्यपाल की ओर से रोके जाने को अवैध भी बताया था। कोर्ट ने कहा था कि यह मनमाना कदम है और कानून के नजरिए से सही नहीं है। राज्यपाल को राज्य की विधानसभा को मदद और सलाह देनी चाहिए थी। बिल पर राज्यपाल एक महीने के भीतर कदम उठाएं।

इंतजार खत्म!

वैष्णो देवी से अब सीधे कश्मीर तक जाएगी ट्रेन

छह जून को प्रधानमंत्री मोदी दिखाएंगे इसे हरी झंडी

श्रीनगर (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 6 जून को श्रीनगर और कटरा के बीच दो स्पेशल डिजाइन की गई वंदे भारत ट्रेनों को वर्चुअली हरी झंडी दिखाएंगे। यह प्रोग्राम एक ऐतिहासिक माइलस्टोन साबित हो सकता है, क्योंकि कश्मीर घाटी को पूरे देश से जोड़ने वाली रेलवे लिंक का निर्माण पूरा हो गया है। यह प्रोजेक्ट 4 दशक पहले शुरू हुआ था। उधमपुर-श्रीनगर-बारामूला रेल लाइन आखिरकार अपने आखिरी 111 किलोमीटर लंबे हिस्से, कटरा-बनिहाल सेक्शन के खुलने के साथ पूरी तरह से चालू हो जाएगी, जिसे जनवरी 2025 में पूरा किया जाना था। इसके उद्घाटन की योजना 19 अप्रैल के लिए बनाई गई थी, लेकिन मौसम संबंधी परेशानियों के वजह से रोक दिया गया। इसके

बाद पहलगाम में आतंकवादी हमले और भारत और पाकिस्तान के बीच बढ़ते तनाव के वजह से इसमें देरी हुई।

अब आधिकारिक लॉन्च 9 जून को तय किया जा रहा है। दो नई वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेनें दोनों दिशाओं में चलेंगी, एक कटरा से श्रीनगर और दूसरी श्रीनगर से कटरा तक। फिलहाल ये हाई-स्पीड ट्रेनें दो शहरों के बीच ही चलेंगी। जम्मू रेलवे यार्ड में चल रहे कंस्ट्रक्शन के वजह से जम्मू और श्रीनगर के बीच सीधी वंदे भारत सर्विस अभी संभव नहीं है। जब तक यह काम पूरा नहीं हो जाता, यात्रियों को आगे की यात्रा के लिए कटरा में ट्रेन बदलनी होगी। अन्य खबर के अनुसार, भारतीय रेलवे का नया जम्मू डिवीजन इस हफ्ते चालू हो गया। जम्मू तवी में मुख्यालय वाला यह भारतीय रेलवे का 70वां डिवीजन है और इसमें ऐतिहासिक फिरोजपुर डिवीजन से फिर से सौंपे गए बड़े खंड शामिल हैं। नया डिवीजन रेलवे के प्रमुख हिस्सों का मैनेजमेंट करेगा और रीजन में ऑपरेशन को मजबूत करेगा। इस प्रोजेक्ट की अनुमानित लागत 43,000 करोड़ रुपये से ज्यादा है, जिसमें अकेले कटरा-बनिहाल सेक्शन में करीब 35,000 करोड़ रुपये का निवेश किया गया है।

यूपी में अग्निवीरों को सरकारी नौकरी में 20 प्रतिशत आरक्षण

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश सरकार ने मंगलवार को कैबिनेट बैठक में अनेक महत्वपूर्ण निर्णयों को मंजूरी दी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में हुई इस बैठक में 11 प्रस्तावों में से 10 को स्वीकृति दी गई। ये निर्णय प्रदेश के युवाओं, किसानों, उद्यमियों, पर्यटकों और गरीब वर्गों के हितों को ध्यान में रखते हुए लिए गए हैं। इसमें सबसे अहम फैसला पूर्व अग्निवीरों को सरकारी सेवाओं में समायोजित करने से जुड़ा है। बैठक का सबसे बड़ा और ऐतिहासिक फैसला पूर्व अग्निवीरों को उत्तर प्रदेश पुलिस, पीएसी, घुड़सवार दस्ते और फायरमैन की सीधी भर्ती में 20 फीसदी क्षैतिज आरक्षण देने का रहा। इसके अलावा इन्हें अधिकतम आयु सीमा में 3 वर्षों की छूट भी दी जाएगी। यह निर्णय अग्निपथ योजना से सेवा के उपरांत लौटने वाले युवाओं के पुनः समायोजन और भविष्य को सुरक्षित करने की दिशा में एक बड़ी पहल के रूप में देखा जा रहा है। राज्य की लोकप्रिय 'एक जनपद एक उत्पाद' योजना को नया रूप देते हुए जेडीओपी 2.0 को मंजूरी दी गई।

योगी सरकार ने लिया ऐतिहासिक फैसला, कैबिनेट में हुआ निर्णय

इसके तहत स्थानीय उत्पादों को अंतरराष्ट्रीय बाजार में प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए नवाचार और संशोधन किए जाएंगे। इससे छोटे सेक्टर को बढ़ावा मिलेगा और स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर सृजित होंगे। प्रदेश सरकार ने यूपी बेड एंड ब्रेकफास्ट एवं होमस्टे नीति-2025 को भी मंजूरी दी है, जिसका उद्देश्य धार्मिक और पर्यटन स्थलों पर आने वाले पर्यटकों को सस्ती, सुलभ और सुरक्षित आवास सुविधा उपलब्ध कराना है। कोई भी व्यक्ति अपने घर के 1 से 6 कमरे और अधिकतम 12 बेड तक की इकाई को होमस्टे के रूप में पंजीकृत करा सकता है। पर्यटक अधिकतम 7 दिनों तक ठहर सकते हैं, आवश्यकता पड़ने पर रिन्यूअल की भी व्यवस्था है। ग्रामीण क्षेत्रों में नाममात्र शुल्क 500 से 750 और शहरी क्षेत्रों में 2000 शुल्क तय किया गया है। पंजीकरण की प्रक्रिया जिलाधिकारी और पुलिस अधीक्षक की अध्यक्षता वाली कमेटी के माध्यम से पूरी होगी। यह नीति न केवल पर्यटन को बढ़ावा देगी, बल्कि स्थानीय निवासियों के लिए रोजगार और आय के नए स्रोत भी खोलेगी। राज्य सरकार ने सार्वजनिक वितरण प्रणाली को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से 'अन्नपूर्णा भवनों' के निर्माण को भी स्वीकृति दी है। यह भवन राशन वितरण में पारदर्शिता और सुविधा सुनिश्चित करेंगे। इनका निर्माण विभिन्न योजनाओं जैसे मनरेगा, सांसद/विधायक निधि, बुंदेलखंड/पूर्वांचल विकास निधि आदि के माध्यम से किया जाएगा। जहां अन्य योजनाओं से धन नहीं मिलेगा, वहां खाद्य एवं रसद विभाग अपनी बचत से निर्माण कराएगा। प्रत्येक जनपद में 75 से 100 भवन प्रति वर्ष निर्माण का लक्ष्य तय किया गया है। राज्य सरकार ने टेलीमीडिया ग्लोबल डाटा सेंटर्स इंडिया प्रा. लि. को दो ग्रिड लाइनों से विद्युत आपूर्ति की अनुमति दी है।

ई.एफ.ए. विद्यालयों में आर्टिफिशियल इन्टेलीजेन्सी पाठ्यक्रम माइक्रोसॉफ्ट के साथ हुआ एमओयू

भोपाल(नप्र)। प्रदेश में शासकीय एजूकेशन फॉर ऑल (ई.एफ.ए.) विद्यालयों में बच्चों को आर्टिफिशियल इन्टेलीजेन्सी (ए.आई) आधारित शिक्षा देने के लिये मध्यप्रदेश राज्य मुक्त स्कूल शिक्षा बोर्ड और माइक्रोसॉफ्ट ने एमओयू किया है। वर्तमान में 53 चयनित शासकीय ई.एफ.ए. विद्यालयों पायलेट प्रोजेक्ट के रूप में आर्टिफिशियल इन्टेलीजेन्सी का पाठ्यक्रम प्रारंभ किया गया है। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को नवीनतम तकनीकी सिखाने में सहायक हो रहा है। इस पाठ्यक्रम से शिक्षा के क्षेत्र में बेहतर परिणाम प्राप्त हो रहे है। विद्यार्थियों को भविष्य में रोजगार के अवसर आसानी से प्राप्त हो सकेंगे। मध्यप्रदेश राज्य मुक्त स्कूल शिक्षा बोर्ड स्कूल शिक्षा विभाग के अंतर्गत संचालित हो रहा है।

यह पाठ्यक्रम एक विषय के रूप में कक्षा 8वीं से 12वीं तक प्रारंभ किया गया है। इसकी कुल अवधि 240 घंटे की है। पिछले वर्ष कक्षा 9वीं में 1013, कक्षा 10वीं में 694 और कक्षा 11वीं में 266 विद्यार्थियों को एआई तकनीक की शिक्षा दी गई। राष्ट्रीय शिक्षा नीति वर्ष 2020 में विद्यालयों में एआई तकनीक का विद्यार्थियों के बीच में बढ़ावा दिये जाने पर जोर दिया गया है। मध्यप्रदेश राज्य मुक्त स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा संचालित ईएफए विद्यालयों में समय-समय पर विभिन्न सॉफ्टवेयर कंपनियों द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया गया है। आर्टिफिशियल इन्टेलीजेन्सी पाठ्यक्रम में पायथन लैंग्वेज भी शामिल है जिससे विद्यार्थियों को प्रोग्रामिंग का भी प्रशिक्षण दिलाये जाने की व्यवस्था है। पायथन लैंग्वेज एक लोकप्रिय और बहुमुखी प्रोग्रामिंग भाषा है जिसका उपयोग विभिन्न प्रकार के कार्यों के लिए किया जाता है, जैसे कि वेब डेवलपमेंट, डेटा साइंस, मशीन लर्निंग और सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट। यह एक हाई-लेवल, व्याख्यात्मक भाषा है, जिसका मतलब है कि इसे कंपाइल करने की आवश्यकता नहीं है और इसे सीधे इंटरप्रेटर द्वारा पूरा किया जा सकता है।

व्यवसायिक शिक्षा के प्रसार पर जोर

नई शिक्षा नीति वर्ष 2020 में स्पष्ट कहा गया है कि व्यवसायिक शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिये यह आवश्यक होगा कि शिक्षा संस्थान नवाचार के माध्यम से ऐसे मॉडल और प्रणालियों की खोज करें जिसके द्वारा विद्यार्थियों को व्यवसाय परक बनाया जा सके। कौशल विकास एंव उद्यमिता की राष्ट्रीय नीति के अनुसार भारत की कुल जनसंख्या का 54 प्रतिशत से अधिक 25 वर्ष से कम आयु की जनसंख्या और 62 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या 15 से 59 वर्ष आयु की है। जनसंख्या के अनुपात के मान से भारत के पास विश्व की सबसे बड़ी कौशल पूंजीयुक्त देश बनने का अवसर है।

भोपाल में हुआ एनसीसी का विशेष संयुक्त राज्य सम्मेलन

- **रक्षा राज्य मंत्री बोले- यह केवल एक प्रशिक्षण संस्था नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण की नींव**

भोपाल (नप्र)। राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी) के विशेष संयुक्त राज्य प्रतिनिधि सम्मेलन का भव्य शुभारंभ मंगलवार को कुशाभाऊ ठाकरे अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन केंद्र में हुआ।

कार्यक्रम का उद्घाटन रक्षा राज्यमंत्री संजय सेठ ने किया। इस दौरान उनका स्वागत डीजी एनसीसी लेफ्टिनेंट जनरल गुरबीर पाल सिंह ने किया। जिन्होंने स्वागत भाषण में एनसीसी की हालिया उपलब्धियों और भविष्य की योजनाओं की रूपरेखा प्रस्तुत की।

सम्मेलन में देशभर से आए एनसीसी निदेशालयों के प्रमुख,

रक्षा मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी, विभिन्न राज्यों के शिक्षा, युवा एवं खेल विभागों के प्रतिनिधि और एनसीसी मुख्यालय के वरिष्ठ अधिकारी शामिल हुए।

सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य एनसीसी कैडेटों की संख्या में 3 लाख की वृद्धि के प्रस्ताव पर विचार करना था। इस विस्तार के लिए कई राज्यों ने सहमति दे दी है, वहीं संबंधित प्रशिक्षण अवसंरचना को शीघ्र मंजूरी देने का भरोसा भी जताया गया।

पूर्व सैनिकों को एनसीसी में प्रशिक्षक के रूप में नई भूमिका- डीजी एनसीसी ने अपने संबोधन में बताया कि भविष्य में एनसीसी का फोकस कैडेटों के लिए आधुनिक प्रशिक्षण सुविधाओं, डिजिटल संसाधनों और बेहतर शिविर संरचनाओं के विकास पर रहेगा। उन्होंने कहा कि इस विस्तार से जहां युवाओं को बेहतर नेतृत्व और अनुशासन का प्रशिक्षण मिलेगा, वहीं पूर्व सैनिकों को एनसीसी में प्रशिक्षक के रूप में नई भूमिका और रोजगार के अवसर भी मिलेंगे। रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने कहा-एनसीसी केवल एक प्रशिक्षण संस्था नहीं, बल्कि यह राष्ट्र निर्माण की नींव है। उन्होंने एनसीसी कैडेटों द्वारा स्वच्छ भारत मिशन, आपदा प्रबंधन और सामाजिक सेवा कार्यों में निभाई जा रही भूमिका की सराहना की।

एनसीसी के विस्तार में सक्रिय भूमिका निभाएं- मंत्री ने हाल ही में 18 मई को माउंट एवरेस्ट पर चढ़ाई करने वाली एनसीसी टीम को विशेष रूप से बधाई देते हुए कहा कि यह साहस, अनुशासन और संकल्प का प्रतीक है, जो एनसीसी युवाओं में विकसित करती है। उन्होंने राज्यों से आग्रह किया कि वे एनसीसी के विस्तार में सक्रिय भूमिका निभाएं और इसके लिए आवश्यक संसाधन, मानव बल और आधारभूत संरचना सुनिश्चित करें।

खंडवा ने जल संचय में ऐतिहासिक उपलब्धि की हासिल

जिला प्रशासन और जनता की प्रतिबद्धता ने बनाया नंबर वन

जल संरक्षण की दिशा में निरंतर बढ़ रहे कदम : जिले में रूफ वाटर हार्वेस्टिंग को मिल रहा बढ़ावा

भोपाल (नप्र)। जल शक्ति अभियानः कैच द रेन के तहत 'जल संचय, जन भागीदारी' पहल में खंडवा जिले ने जल संरक्षण के क्षेत्र में ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल करते हुए केंद्रीय जल शक्ति मंत्रालय की रैंकिंग में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। इसके अंतर्गत जिले ने 1,29,046 से अधिक जल संरक्षण संरचनाओं का निर्माण और पंजीकरण कर नया कीर्तिमान स्थापित किया है। इस उपलब्धि से जिले में उत्साह की लहर है। जल संरक्षण के लिए नागरिकों ने जिला प्रशासन के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य किया है।

जल संरक्षण के इन प्रयासों से न केवल भूजल स्तर में उल्लेखनीय सुधार हुआ है, बल्कि वर्षा के जल का अधिकतम उपयोग सुनिश्चित कर भविष्य की पीढ़ियों के लिए जल सुरक्षा को मजबूत किया गया है। स्थानीय निवासियों ने कहा कि हमारा जिला जल संरक्षण में देश में अव्वल है और यह हम सभी के लिए गौरव का क्षण है। हम प्रशासन के साथ मिलकर हर बूंद को संरक्षित करने के लिए और अधिक प्रयास करेंगे।

कलेक्टर श्री ऋषभ गुप्ता के कुशल नेतृत्व में जिला प्रशासन ने जल संरक्षण को जन-आंदोलन का रूप दे दिया है। खास तौर पर रूफ वाटर हार्वेस्टिंग को बढ़ावा देने के लिए जिले में व्यापक स्तर पर कार्य हो रहा है। सभी शासकीय भवनों में रूफ वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम स्थापित करने का लक्ष्य रखा गया है। इसके बाद यह अभियान शासकीय आवासों, व्यावसायिक प्रतिष्ठानों और दो मंजिला आवासीय भवनों तक चरणबद्ध रूप से विस्तारित होगा।

कलेक्टर ने कहा, जल है तो जीवन है। रूफ वाटर हार्वेस्टिंग के माध्यम से हम न केवल जल संकट से निपट सकते हैं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। उन्होंने जिले की सभी पक्की छतों पर रूफ वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम स्थापित करने का लक्ष्य रखा है और जनता से इस अभियान में सक्रिय भागीदारी करने की अपील की है। इस अभियान को गति देने के लिए हाल ही में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें ग्राम पंचायत प्रतिनिधियों, स्थानीय नागरिकों और विशेषज्ञों ने हिस्सा लिया। कार्यशाला में रूफ वाटर हार्वेस्टिंग की तकनीकी जानकारी, इसके लाभ और स्थापना प्रक्रिया पर विस्तृत चर्चा हुई।

विशेषज्ञों ने बताया कि यह तकनीक भूजल स्तर को बढ़ाने के साथ वर्षा जल के बेहतर उपयोग को सुनिश्चित करती है। जिले में निरंतर जल संवाद किए जा रहे हैं। अब नुक्कड़ नाटक, कार्यशालाओं एवं संगोष्ठियों के माध्यम से भी जनता को जागरूक किया जाएगा।

जिला प्रशासन ने जहां गिरे, जब गिरे-वर्षा का जल संचित करें के मंत्र को साकार करने का संकल्प लिया है। यह उपलब्धि दर्शाती है कि सामूहिक प्रयासों से जल संरक्षण का लक्ष्य न केवल संभव है, बल्कि यह एक सुरक्षित और समृद्ध भविष्य की नींव भी रखता है। खंडवा की यह उपलब्धि और जनता-प्रशासन की संयुक्त प्रतिबद्धता पूरे देश के लिए प्रेरणा बन रही है।

भोपाल की जान्हवी मल्होत्रा बनीं मिस यूनिवर्स मध्यप्रदेश

जीता 2025 का खिताब, कहा- यह मेरी सालों की मेहनत; तापसी-श्रेया रहीं रनर अप

भोपाल (नप्र)। मिस यूनिवर्स एमपी-2025 का खिताब जान्हवी मल्होत्रा ने अपने नाम कर लिया। फर्स्ट रनर अप तापसी ठाकुर और सेकेंड रनर अप श्रेया बेड़िया रहीं। खिताब जीतने के बाद जान्हवी ने मीडिया से कहा कि मुझे बहुत खुशी हो रही है। यह मेरी सालों की मेहनत थी। मुझे अब अपना स्टेट रिप्रजेंट करने का मौका मिलेगा। शुरुआती राउंड में नर्वस नेस होती थी। लेकिन, मुझे पता था जीतना है, जीतने के लिए आई हूं और जीतकर जा रही हूं। जान्हवी मल्होत्रा का कहना है खुशी है अब उन्हें स्टेट को रिप्रजेंट करने का मौका मिलेगा।

मॉडल्स ने रैंप पर जलवे बिखेरे- सोमवार को भोपाल में एक निजी होटल में मिस यूनिवर्स एमपी-2025 का ग्रैंड फिनाले आयोजित किया गया। देर रात तक चले कार्यक्रम में मॉडल्स ने रैंप पर जलवे बिखेरे। कार्यक्रम में एक से बढ़कर एक डांस परफॉर्मेंस भी दी गई। वहीं, फिनाले में मॉडल्स को

अलग-अलग टाइटल दिए गए।

सोमवार शाम को कॉकटेल राउंड से फिनाले शुरू हुआ। सभी 13 फाइनलिस्ट्स ब्लैक वन पीस पहनकर रैम्प पर उतरीं। अपनी चाल-ढाल, एटीट्यूड और आत्मविश्वास से जजेस और दर्शकों को प्रभावित किया। इस राउंड में सिर्फ लुक्स ही नहीं, बल्कि प्रतिभा की भी झलक दिखी।

इसके बाद हुआ रिसॉर्ट वियर राउंड हुआ। जिसमें प्रतिभागियों ने लाइट गाउन और सिंगल पीस ड्रेस में रैम्प वॉक किया। यह राउंड प्रतिभागियों के स्टाइल और आत्मविश्वास का आइना बना। रैम्प पर उनकी चाल, स्माइल और प्रजेंस दर्शकों के बीच चर्चा का विषय बनी रही।

रिया सिंघा बोलीं- मुझे भोपाल बहुत सुंदर लगा- फिनाले में बतौर जज पहुंची मिस यूनिवर्स रिया सिंघा ने बताया कि मुझे भोपाल बहुत ही सुंदर लगा। सिटी ऑफ लेक है। मुझे यहां की नेचर ग्रीनरी बहुत पसंद आई। मैंने पार्टिसिपेंट से बात की है। मध्य प्रदेश बहुत ही बड़ी जगह है। यहां बहुत टैलेंट है। रिया ने बताया- जब मैंने प्रतिभागियों से बात की तो सभी मुझे बहुत ही टैलेंटेड लगे। मैं इसके लिए बहुत ही उत्सुक हूं। इस पार्टिसिपेशन में सबसे पहले आपको खुद को जानना जरूरी है। आप यहां से अपने आप को रिप्रजेंट नहीं कर रहे हो, आप पूरे देश को रिप्रजेंट कर रहे हो।

13 फाइनलिस्ट ने रैम्प पर बिखेरा जलवा- 20 मई को हुए स्टेट लेवल ऑडिशन में प्रदेशभर से चयनित 13 फाइनलिस्ट ने फिनाले में रैम्प पर जलवा बिखेरा। शो की खास बात यह है कि यह आयोजन मध्यप्रदेश की आधिकारिक स्टेट फ्रेंचाइजी द्वारा किया गया।

पुरानी रंजिश में ताबड़तोड़ फायरिंग, एक की मौत

ग्वालियर में गोलियां चलाते हुए भागे बदमाश; एक की हालत गंभीर

ग्वालियर (नप्र)। ग्वालियर में सोमवार रात को बदमाशों ने पुरानी रंजिश में दो युवकों पर ताबड़तोड़ गोलियां चला दीं। इसके बाद फायरिंग करते हुए मौके से फरार हो गए। गोली लगने से घायल दोनों युवकों को एक निजी अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने भोला सिकरवार नाम के शख्स को मृत घोषित कर दिया, जबकि उसके साथी कल्लू उर्फ पवन श्रीवास की हालत गंभीर बनी हुई है। घटना हजीरा के बिरला नगर लाइन नंबर दो की गली नंबर एक में सोमवार रात 10 बजे की है। घटना की सूचना मिलते ही एएसपी कृष्ण लालचंदानी, सीएसपी नागेन्द्र सिंह सिकरवार और टीआई शिवमंगल सिंह सेंगर मौके पर पहुंचे। घटना के बाद इलाके में तनाव और दहशत का माहौल है। मृतक भोला सिकरवार के भाई हेमू सिकरवार की शिकायत पर हजीरा थाने में 9 हमलावरों के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज किया गया है। एक हमलावर राहुल सोलंकी को गिरफ्तार कर लिया गया है। पुलिस ने उसके कब्जे से हत्या में इस्तेमाल कट्टा और स्कूटी बरामद कर ली है। बाकी आरोपियों की तलाश में पुलिस की आधा दर्जन टीमें भिंड, मोहना और इंदौर में दबिश दे रही हैं। वहीं, मुख्य आरोपी बंटी उर्फ रिंकू भदौरिया पर एसएसपी ने 10,000 का इनाम घोषित किया है।

4500 करोड़ का फिर कर्ज लेगी मोहन यादव सरकार

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश की मोहन यादव सरकार नए वित्त वर्ष में दूसरी बार 4500 करोड़ रुपए का कर्ज लेने जा रही है। यह कर्ज 2000 करोड़ और 2500 करोड़ रुपए का होगा। इसके पहले मई में ढाई-ढाई हजार करोड़ रुपए के दो कर्ज लिए गए थे। इस तरह चालू वित्त वर्ष में सरकार पर कर्ज की राशि 9500 करोड़ रुपए हो जाएगी जबकि कुल कर्ज का आंकड़ा बढ़कर 431240.27 करोड़ रुपए हो जाएगा।

जबलपुर में नेताओं-अफसरों तक पहुंचाई जाती थीं लड़कियां

भाजपा नेता के होटल में कोलकाता, असम, झारखंड और छत्तीसगढ़ से बुलाते थे

जबलपुर (नप्र)। जबलपुर के गढ़ा में बीजेपी नेता के होटल में चल रहे हाई-प्रोफाइल सेक्स रैकेट का खुलासा हुआ है। यहां कोलकाता, असम, झारखंड और छत्तीसगढ़ से लड़कियों को बुलाया जाता था। ये भी आरोप है कि इन लड़कियों को नेताओं और अधिकारियों तक पहुंचाया जाता था। इस हाई प्रोफाइल सेक्स रैकेट को भाजपा नेता अतुल चौरसिया और उसका साथी शीतल दुबे चला रहा था। इसका खुलासा असम की एक की महिला की शिकायत के बाद हुआ। महिला ने पुलिस को बताया कि उसे झांसा देकर जबलपुर लाया गया, जिसके बाद यहां देह व्यापार में झोंक दिया।

नेताओं-अफसरों तक जाती थीं लड़कियां

32 वर्षीय पीड़िता ने बताया कि तीन साल पहले असम में मनीषा नाम की महिला ने उसे अच्छी नौकरी का झांसा देकर जबलपुर बुलाया था।

मुख्यमंत्री आज करेंगे क्षिप्रा तीर्थ परिक्रमा का शुभारंभ

गंगा दशहरा पर माँ क्षिप्रा को अर्पित करेंगे 351 फीट की भव्य चुनरी

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 4 जून को प्रातः 8 बजे उज्जैन के रामघाट से जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत आयोजित क्षिप्रा तीर्थ परिक्रमा का शुभारंभ करेंगे। इस आयोजन में 5 जून गंगा दशहरा को मुख्यमंत्री माँ क्षिप्रा को 351 फीट लंबी भव्य चुनरी अर्पित करेंगे। श्रद्धा, संस्कृति और जल संरक्षण के भाव को समर्पित यह आयोजन गंगा दशहरा पर्व की पूर्व संध्या पर होगा।

क्षिप्रा लोक संस्कृति समिति के इस दो दिवसीय तीर्थ परिक्रमा आयोजन में संतों, इतिहासकारों, साहित्यकारों और विषय विशेषज्ञों सहित हजारों श्रद्धालु सहभागी होंगे। यात्रा मार्ग में पौराणिक और ऐतिहासिक स्थलों के दर्शन के साथ-साथ धार्मिक कार्यक्रम भी होंगे।

परिक्रमा पथ और कार्यक्रम- क्षिप्रा तीर्थ परिक्रमा यात्रा उज्जैन के रामघाट से 4 जून को प्रारंभ होकर नरसिंह घाट, कर्कराज मंदिर, नानाखेड़ा, त्रिवेणी, शनि मंदिर और गुरुकुल स्कूल तक जाएगी। यहाँ विश्राम एवं प्रसादी की व्यवस्था रहेगी। यात्रा पुनः प्रारंभ होकर सिकंदरी, गोठड़ा, चिंतामण, भूखी माता, गुरुनानक घाट होते हुए शाम को रामघाट लौटेगी। यहाँ प्रसिद्ध भजन गायक श्री पवन तिवारी की संगीतमय प्रस्तुति होगी।

परिक्रमा 5 जून को दत्त अखाड़ा घाट से ध्वज पूजन के साथ पुनः प्रारंभ होगी और रणजीत हनुमान, मंगलनाथ, काल भैरव, सांदीपनि आश्रम, ऋणमुक्तेश्वर तथा अन्य तीर्थों से होकर शाम 5 बजे रामघाट लौटेगी।

गंगा दशहरा पर विशेष आयोजन- मुख्यमंत्री डॉ. यादव 5 जून की शाम दत्त अखाड़ा घाट पर माँ क्षिप्रा को 351 फीट लंबी भव्य चुनरी अर्पित करेंगे। इस अवसर पर भारतीय सेना के सिंफनी बैंड, प्रसिद्ध हरिकथा वाचक ग्वालियर के पं. ढोली बुवा महाराज और मुंबई की प्रख्यात भजन गायिका सुश्री स्वस्ति मेहुल अपनी प्रस्तुतियाँ देंगे।

भोपाल में लगा एमपी का पहला ओपन 'ऑक्सीजन स्टेशन'

लोगों को मिल सकेगी फ्री एंट्री; घर पर भी उगाया जा सकेगा मिनी जंगल

भोपाल (नप्र)। विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर राजधानी भोपाल के डीबी मॉल में मध्यप्रदेश का पहला ओपन ऑक्सीजन स्टेशन बनाया गया है। यह स्टेशन आम लोगों के लिए फ्री है। इसे 'जंगल वास' संस्था ने तैयार किया है। इसकी खास बात ये है कि इस तरह का ऑक्सीजन स्टेशन कोई भी व्यक्ति अपने घर की छत, बालकनी, पेंटहाउस, कैफे या ऑफिस में तैयार कर सकता है। भोपाल के डीबी मॉल में लगा यह ऑक्सीजन स्टेशन 1 जून से 5 जून तक दोपहर 12 बजे से रात 8 बजे तक आम लोगों के लिए खुला रहेगा। इसका मकसद है कि लोग देख सकें कि कैसे छोटे स्तर पर भी पर्यावरण के लिए बड़ा योगदान दिया जा सकता है।

क्या है ऑक्सीजन स्टेशन?

भोपाल की पर्यावरणविद् और जंगल वास की संस्थापक साक्षी भारद्वाज ने बताया कि ऑक्सीजन स्टेशन एक जीवंत पारिस्थितिकी तंत्र है, जो बायोडायवर्सिटी और सस्टनेबिलिटी को बढ़ावा देता है। इसमें कम्पोस्ट (एक प्रकार का जैविक खाद है, जो पत्तियों, रसोई का कचरा आदि के अपघटन से बनता है) जैसे प्राकृतिक और टिकाऊ मटेरियल का उपयोग किया गया है।इसमें 10 से लेकर 1000 प्रकार की पौधों की प्रजातियां लगाई जाती हैं। इनमें हवा शुद्ध करने वाले, खाने योग्य और पौधे शामिल होते हैं।

लगे दुनियाभर से लाए गए चुनिंदा पौधे

साक्षी ने बताया कि यह एक जरिया है जहां कोई भी व्यक्ति अपने घर की छत, बालकनी, पेंटहाउस, कैफे या ऑफिस में छोटा-सा ऑक्सीजन जोन तैयार कर सकता है। वहीं, इसमें तरह तरह के पेड़ पौधे होते है जो ज्यादा मात्रा में आक्सीजन देते है।

साक्षी ने बताया कि यह सिर्फ हरियाली नहीं, बल्कि प्रकृति से जुड़ने का एक तरीका है। अब तक मध्य प्रदेश के में कुल 100 ऑक्सीजन स्टेशन बनाए जा चुके है। लेकिन डीबी मॉल में लगाया गया यह पहला ऑक्सीजन स्टेशन होगा जो ओपन हैं। साथ ही यहां पर इनडोर और आउटडोर पौधे लगाएं गए है। यह भारत सहित दुनियाभर से लाए गए चुनिंदा और हैंडपिक्ड पौधे हैं।

कैसे बनता है ऑक्सीजन स्टेशन

इसे लेकर साक्षी भारद्वाज ने बताया कि जिसे ऑक्सीजन स्टेशन बनवाना होता है। 'जंगल वास' की टीम सबसे पहले उस जगह पर जाकर एरिया का मुआयना करती है। फिर वहां की जगह के अनुसार स्टेशन का डिजाइन तैयार किया जाता है और उपयुक्त पौधों का चयन किया जाता है। इसे पूरी तरह से कस्टमाइज किया जा सकता है चाहें तो फलदार पौधे लगवाएं या सजावटी।

संपादकीय

देशभक्त होने का दर्द!

विदेशों में ऑपरेशन सिंदूर को लेकर भारत का पक्ष रखने गए एक प्रतिनिधिमंडल के सदस्य, पूर्व विदेश राज्य मंत्री और सलमान खुर्शीद एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री शशि थरूर पर स्वदेश में उन पर हो रहे हमलों से आहत हैं। ये दोनों ही वरिष्ठ कांग्रेस नेता हैं और पार्टी की मर्जी के बगैर सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल का हिस्सा बन कर गए हैं। विदेशों में वो भारत का पक्ष भी मजबूती से रख रहे हैं। स्वाभाविक है कि जो पक्ष रखा जा रहा है, वह मोदी सरकार का पक्ष है। यही बात शायद कांग्रेस को रास नहीं आ रही है। इसकी ताजा मिसाल सलमान खुर्शीद की सोशल मीडिया पोस्ट से मिली। इसमे खुर्शीद ने सवाल किया है कि क्या इस देश में 'देशभक्त होना इतना मुश्किल है? मुझे यह देखकर दुख होता है कि लोग राजनीतिक फायदे के लिए बातें कर रहे हैं। क्या आतंकवाद के खिलाफ काम करते समय देशभक्त होना इतना मुश्किल है?

गौरतलब है कि सलमान खुर्शीद जनतादल (यू.) के सांसद संजय कुमार झा के नेतृत्व वाले एक सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल का हिस्सा हैं। यह प्रतिनिधिमंडल इंडोनेशिया, दक्षिण कोरिया, जापान और सिंगापुर का दौरा करने के बाद फिलहाल मलेशिया में है। खुर्शीद ने अपने एक्स पोस्ट के बारे में बाद में एक न्यूज एजेंसी से कहा कि मुझसे कई सवाल पूछे जा रहे हैं, जो उत्साहजनक नहीं हैं, जब आप देश के लिए कुछ करना चाहते हैं। 'लोग' कहते हैं कि आप बीजेपी के लोगों के साथ एक प्रतिनिधिमंडल में क्या कर रहे हैं। इसका जवाब भी खुद ही देते हुए खुर्शीद ने कहा कि हम यहां वह कर रहे हैं जो देश के लिए जरूरी है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप किस पार्टी से हैं, आज जो जरूरी है, वह देश के समर्थन में एक आवाज है और हम वही कर रहे हैं। हम आतंकवाद विरोधी अभियान इसलिए चला रहे हैं क्योंकि यह 'इंडिया फर्स्ट' है। सलमान ने एक सच्चे देशभक्त की तरह कहा कि अगर मैं यहां भारत सरकार का विरोध करना चाहता, तो मैं घर पर रहता। मैं यहां भारत के लिए बोलने आया हूं। हम यहां समर्थन करने के लिए हैं। 10-12 दिनों के बाद फिर हमे घर जाना होगा और वह करना होगा जो आपको घर पर करने की आवश्यकता है। जाहिर है कि सलमान का निशाना उनकी अपनी कांग्रेस पार्टी के लोग ही हैं। कुछ वैसा ही हाल शशि थरूर का भी है। उन पर भारत से हमले कराए जा रहे हैं, पार्टी के प्रति निष्ठा पर सवाल उठाए जा रहे हैं। दिल्ली में कांग्रेस नेता उदितराज से जिस तरह थरूर पर हमला कराया गया, वह इसी का नतीजा था। ये वही उदित राज हैं, जो 2014 में दिल्ली से भाजपा के टिकट पर सांसद बने थे। तब उन्हें मोदी से कोई दिक्कत नहीं थी। लेकिन अगले चुनाव में पार्टी ने उनका टिकट काट दिया तो वो 'सेक्युलर' हो गए। कांग्रेस एक जमाने में वह कहा करती थी कि वही ऐसी पार्टी है, जो अपने बुजुर्गों का सम्मान करती है। आज वही अपने उन वरिष्ठ नेताओं पर निशाना साध रही है, जो भारत का पक्ष रखने परदेस गए हुए हैं। कांग्रेस जो राजनीति कर रही है, वह तो इन सदस्यों की स्वदेश वापसी पर भी हो सकती थी। कुछ कांग्रेस नेताओं का मानना है कि विदेश प्रतिनिधिमंडल में गए ये नेता असल नरेन्द्र मोदी की राजनीति का शिकार हो गए हैं। व्यक्तिगत पसंद नापसंद अपनी जगह है, लेकिन जब बात राष्ट्र की आती है तो कांग्रेस को भी बड़ा दिल दिखाना चाहिए। अगर उसके वरिष्ठ नेता को यह कहना पड़े कि इस देश में क्या देशभक्त होना इतना मुश्किल है तो यह कोई गर्व करने वाली बात नहीं है।

चिराग पासवान की वापसी का बिहार राजनीति पर असर

नजरिया

अशोक भाटिया

लेखक मुंबई निवासी स्वतंत्र पत्रकार हैं।

केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान बिहार विधानसभा का चुनाव लड़ने की सुगबुगाहट शुरू हो गई है। बताया जाता है कि अपने राष्ट्रीय अध्यक्ष को विधानसभा चुनाव के लिए मैदान में उतारने से संबंधित प्रस्ताव लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) ने भी पास कर दिया है। इसे लेकर अब चिराग पासवान का भी बयान आया है। एलजेपीआर के राष्ट्रीय अध्यक्ष और केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान ने कहा है कि खुद को बहुत लंबे समय तक केंद्र की राजनीति में नहीं देखता। उन्होंने यह भी कहा है कि बिहार वापस जाना चाहता हूं। चिराग पासवान ने कहना है कि मेरे राजनीति में आने का कारण बिहार और बिहारी रहे हैं। जिस सोच के साथ राजनीति में आया हूं, वह ये है कि मेरा राज्य बिहार विकसित राज्यों की श्रेणी में आए। उन्होंने कहा कि यही मेरी इच्छा है और तीसरी बार सांसद बनकर मुझे समझ आया कि दिल्ली में रहकर बिहार के लिए काम करना संभव नहीं होगा। चिराग ने कहा कि मेरा अपना एक विजन भी है 'बिहार फर्स्ट, बिहारी फर्स्ट'।

चिराग पासवान का कहना है कि कि मेरा राज्य बिहार विकसित राज्यों की बराबरी पर आकर खड़ा हो, यह चाहता हूं। चिराग ने यह भी कहा कि पार्टी के सामने अपनी इच्छा रखी थी। जल्द वापस बिहार जाना चाहता हूं। मेरे विधानसभा चुनाव लड़ने से पार्टी को फायदा होगा। उन्होंने कहा कि पार्टी इसका आकलन कर रही है। हम चाहे जितनी सीटों पर भी चुनाव लड़ें, हमारा ध्यान स्ट्राइक रेट पर है। चिराग ने कहा कि मेरे चुनाव लड़ने से मेरी पार्टी और मेरे गठबंधन का प्रदर्शन अगर बेहतर होता है, तो जरूर लड़ूंगा। गौरतलब है कि एक दिन पहले चिराग पासवान ने कहा था कि पार्टी की तरफ से मेरे विधानसभा चुनाव लड़ने का प्रस्ताव आया है। उन्होंने यह भी कहा था कि इस पर अभी और विस्तार से चर्चा होगी। पार्टी ने प्रस्ताव दिया है कि सामान्य सीट से चुनाव लड़ूं। हालांकि, अभी इस पर और चर्चा होना बाकी है।

वैसे चिराग पासवान केंद्र सरकार में मंत्री हैं। केंद्रीय मंत्री रहते हुए अगर वह बिहार विधानसभा चुनाव लड़ने की बात कर रहे हैं, तो जाहिर है उनका लक्ष्य मंत्री बनना तो नहीं ही होगा। फिर उनका प्लान क्या है? दरअसल, चिराग पासवान जानते हैं कि केंद्रीय राजनीति में भी उनके पैर तब तक ही जमे हैं, जब तक वह बिहार में मजबूत हैं। आखिरकार, उनकी सियासत का बेस तो बिहार ही है। बीजेपी मध्य प्रदेश और राजस्थान से लेकर हरियाणा तक, केंद्रीय मंत्रियों को विधानसभा चुनाव लड़ाती आई है। 2020 के बिहार चुनाव में चिराग की पार्टी शून्य सीट पर सिमट गई थी। खुद मैदान में उतरने के पीछे चिराग की रणनीति यह भी हो सकती है कि शायद इससे एलजेपीआर को कुछ सीटों पर फायदा मिल जाए।

बिहार के वरिष्ठ पत्रकार ओमप्रकाश अश्क ने कहा कि राजनीति में कोई अस्थायी दोस्त या दुश्मन नहीं होता। चिराग की रणनीति कुछ सीटें जीतकर अपनी बारगेनिंग पावर बढ़ाने की हो सकती है, खासकर ऐसे माहौल में जब नीतीश कुमार के भविष्य को लेकर अनिश्चितता की स्थिति हो। चिराग भी भविष्य के सीएम दावेदारों में गिने जाते हैं, 'बिहार फर्स्ट, बिहारी फर्स्ट' जैसे कैंपेन से अपनी मौजूदगी बनाए रखते हैं। वह बिहार की सियासी पिच खाली नहीं छोड़ना चाहते। जेडीएस के एचडी कुमारस्वामी कम सीटें होने के बावजूद सीएम बन सकते हैं, निर्दलीय मधु कोड़ा झारखंड के सीएम बन सकते हैं, नीतीश कुमार तीसरे नंबर की पार्टी का नेता होने के बावजूद पांच साल सरकार चला सकते हैं, तो सियासत में कुछ भी हो सकता है। चिराग को भी नीतीश के भविष्य पर संशय में अपने लिए उम्मीद दिख रही है।

साल 2005 में दो बार बिहार विधानसभा के चुनाव हुए थे। पहले चुनाव में त्रिशंकू जनादेश आया था। तब चिराग पासवान के पिता रामविलास पासवान तत्कालीन संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (यूपीए) सरकार में मंत्री थे। केंद्र सरकार में गठबंधन साझीदार होने के बावजूद एलजेपी ने बिहार चुनाव अकेले लड़ा और पार्टी 29 सीटें जीतकर किंगमेकर के तौर पर उभरी। तब आरजेडी 75 सीटें जीतकर सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी थी और 92 सीटों के साथ एनडीए सबसे बड़ा गठबंधन। कांग्रेस के 10, सपा के चार, एनसीपी के तीन और लेफ्ट के 11 विधायक थे। आरजेडी को कांग्रेस और इन छोटी पार्टियों के साथ ही केंद्र में गठबंधन सहयोगी एलजेपी के समर्थन से सरकार बना लेने का विश्वास था, लेकिन ऐसा हुआ नहीं।

सत्ता की चाबी लेकर घूम रहे रामविलास पासवान ने तब मुस्लिम मुख्यमंत्री की मांग कर पेच फंसा दिया। नीतीश कुमार की अगुवाई में एनडीए ने सरकार बनाई, लेकिन अल्पमत की यह सरकार भी अधिक दिनों तक नहीं चल सकी। नीतीश को कुर्सी छोड़नी पड़ी और उसी साल अक्टूबर में दोबार चुनाव हुए। 2005 के दूसरे चुनाव में एलजेपी की सत्ता की चाबी खो गई और एनडीए ने पूर्ण बहुमत के साथ सरकार बनाई। इन चुनावों में क्या चिराग भी अपनी पार्टी के लिए सत्ता की चाबी खोज रहे हैं?

चिराग पासवान के हालिया रुख के बाद 2020 के बिहार चुनाव की यादें ताजा हो आई हैं। तब चिराग पासवान अपने पिता की बनाई पार्टी एलजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष हुआ करते थे। चिराग की पार्टी तब 30 सीट की मांग कर रही थी। बात नहीं बनी तो चिराग की पार्टी ने अकेले मैदान में उतरने का ऐलान कर दिया। चिराग ने 137 विधानसभा सीटों पर उम्मीदवार उतारे, खासकर उन सीटों पर जहां जेडीयू चुनाव लड़ रही थी। लेकिन बात 20 साल पुरानी कहानी की भी हो रही है।

चिराग की पार्टी ने जब 2020 में एकला चलो की राह पकड़ी थी, तब भी वही पार्टी के अध्यक्ष थे। तब पार्टी एनडीए में भी थी। हालांकि, चिराग तब केंद्र में मंत्री नहीं थे। 20 साल पहले भी कुछ ऐसा ही हुआ था। तब चिराग के पिता रामविलास पासवान केंद्र सरकार में मंत्री थे। केंद्र में यूपीए की सरकार थी और जब बिहार चुनाव की बारी आई, एलजेपी ने अकेले चुनाव लड़ा। केंद्र की सरकार में साथ होते हुए भी रामविलास पासवान का समर्थन आरजेडी को नहीं मिल पाया और पार्टी सत्ता से ऐसी चूकी कि नीतीश के बगैर सत्ता का स्वाद चखने की स्थिति में कभी आ नहीं पाई। क्या चिराग इस बार एनडीए के लिए वही कहानी दोहरा पाएंगे?

चिराग ने यह भी कहा कि उनके चुनाव लड़ने से बिहार में एनडीए को फायदा हो सकता है। उन्होंने कहा कि यह फैसला सिर्फ व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा का नहीं है, बल्कि पार्टी और NDA गठबंधन की रणनीति का हिस्सा है।लेकिन तीन बार के सांसद और मंत्री चिराग पासवान अब विधायक क्यों बनना चाहते हैं। क्या उनका मकसद सिर्फ विधायक बनने तक सीमित है या इसका अगला कदम मुख्यमंत्री पद की दावेदारी होगा? इसका जवाब तो आगे मिलेगा। लेकिन चिराग पासवान के इस दांव ने बिहार में सियासी सरगर्मी जरूर बढ़ा दी है। एलजेपी के सांसद और प्रदेश प्रभारी अरुण भारती ने अपने नेता का समर्थन करते हुए बिहार में चुनाव लड़ने के फैसले का स्वागत किया है। उन्होंने एक्स पर पोस्ट करते हुए कहा कि चिराग हमेशा कहते हैं कि उनकी राजनीति बिहार केंद्रित है और उनका विजन 'बिहार फर्स्ट, बिहारी फर्स्ट' एक विकसित और आत्मनिर्भर बिहार का संकल्प है। यह तभी संभव है जब वे खुद बिहार में रहकर नेतृत्व करें। जब मैं प्रदेश प्रभारी के रूप में गांव-गांव गया, हर जगह लोगों की एक ही मांग थी कि चिराग को अब बिहार में बड़ी भूमिका निभानी चाहिए। हाल ही में पार्टी कार्यकारिणी की बैठक में भी सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास हुआ कि वे आगामी विधानसभा चुनाव में खुद चुनाव लड़ें।अरुण भारती ने आगे कहा कि कार्यकर्ताओं की यह भी भावना है कि इस बार वे किसी आरक्षित सीट से नहीं, बल्कि एक सामान्य सीट से चुनाव लड़ें ताकि यह संदेश जाए कि वे अब सिर्फ एक वर्ग नहीं, पूरे बिहार का नेतृत्व करने के लिए तैयार हैं।

चिराग के चुनाव लड़ने पर आरजेडी नेता मृत्युंजय तिवारी ने कहा कि बिहार में चुनाव से पहले ही NDA में सिर फुटव्वल शुरू हो गई है और मुख्यमंत्री पद के कई दावेदार हो गए हैं। तिवारी ने कहा कि LJP(R) अब चिराग पासवान को सीएम कैंडिडेट बता रही है और जेडीयू-बीजेपी नीतीश कुमार को सीएम कैंडिडेट बता रहे हैं। उन्होंने कहा कि NDA में चिराग की पार्टी की लगातार उपेक्षा हो रही है।

आरजेडी प्रवक्ता के बयान से साफ है कि चिराग के विधानसभा चुनाव लड़ने को विपक्ष भी अपने लिए एक मौके के तौर पर देख रहा है। अगर चुनाव नतीजों में किसी भी पार्टी को स्पष्ट बहुमत नहीं मिलता है तो ऐसे में चिराग की भूमिका अहम हो सकती है। तेजस्वी यादव के साथ वह पहले ही अपने पारपारिक संबंधों को हवाला दे चुके हैं, ऐसे में उनका पाला बदल भी मुमकिन हो सकता है। लेकिन फिलहाल औपचारिक तौर पर चिराग पासवान के विधानसभा चुनाव लड़ने का इंतजार है।

अब उनकी पार्टी के तमाम प्रकोष्ठों ने उन्हें चुनाव लड़ने की हरी झंडी दे दी है। खुद चिराग ने भी कह दिया है कि वे एनडीए में रह कर ही चुनाव लड़ेंगे। मुख्यमंत्री पद की दावेदारी नहीं करेंगे। नीतीश कुमार ही मुख्यमंत्री रहेंगे। पार्टी इस बाबत सर्वेक्षण करा रही है कि उनके चुनाव लड़ने से दल और एनडीए को कितना फायदा होगा। बहरहाल, चिराग अगर चुनाव लड़ते हैं तो इससे निश्चित तौर पर एनडीए को फायदा होगा। अलबत्ता महागठबंधन की मुश्किलें बढ़ सकती हैं। महागठबंधन में शामिल कांग्रेस के नेता राहुल गांधी की निगाहें दलित वोटरों पर लगी हुई हैं।

सामाजिक संरचना में प्रोफेसर की भूमिका और एनएफएस का खेल

शिक्षा

डॉ. संजीव कुमार

लेखक सामाजिक एवं राजनीतिक विश्लेषक हैं।

बचपन में मैंने एक दिन पिताजी से पूछा की 'सबसे ऊंची शिक्षा क्या होती है' उन्होंने कहा पीएचडी,मैंने फिर पूछा क्या इसके बाद पढ़ाई खत्म हो जाती है! उन्होंने कहा नहीं परंतु इतना शिक्षा हासिल करने के बाद एक आदमी हजारों मनुष्यों का जीवन बदल सकता है। धीरे-धीरे जब मैं विश्वविद्यालय तक पहुंचा तब मैंने प्रोफेसरों की लॉबी के बारे में सुना। जिस तरह गांव में लोग जातियों में बटे हुए अपने-अपने खेमे में रहते हैं ठीक उसी प्रकार विश्वविद्यालयों में भी सभी प्रोफेसर जाति विचार और धर्म के नाम पर अपना सर्कल बनाएं हुए हैं। आज के दौर में आपको इन विश्वविद्यालयों में संघ और उससे जुड़ी हुई विचारधारा के लोग सभी जगह जड़े जमाए हुए हैं दूसरे स्थान पर वामपंथी हैं लेकीन उनकी संख्या इनके दशवें हिस्से के बराबर भी नहीं और एक प्रतिशत से भी कम स्थिति में अम्बेडकर वादी हैं। समाज में जो थोड़े बहुत प्रोफ़ेसर आपको दिखाई दे रहे है वे इसी दुसरे और तीसरे खेमे की वजह से संभव हो पाता है। ऐसी परस्थिति में आपका बच्चा जब यहां दाखिला लेता है तब वह सत्ता और इसकी चालाकियों से बड़ा दूर होता है। अभी तक वह धर्म और जाति के नाम पर शारीरिक भेदभाव को ही समझ रहा होता है लेकिन अब उसे मानसिक भेदभाव के विषय में लड़ना और सतर्क रहना सिखाया जाता है।

स्नातक और स्नातकोत्तर तक की शिक्षा आप थोड़ी आसानी से भले हासिल कर ले परंतु मजदूर और शोषित जातियों के साथ असली खेल शोध में दाखिले (पीएचडी) के साथ आरम्भ होता है। यहां से असली संकीर्णता और जातिवाद आरंभ होती है वे लोग जो कहते हैं कि आज देश में जातिवाद खत्म हो गया है उन्हें अगर विश्वविद्यालयों में व्याप्त घोर जातिवाद के बारे में पता चलेगा तो पैरों तले जमीन नज़र नहीं आएगी। आपके साथ फिल्म देखने वाला आपके साथ खाना खाने वाला आपके उच्च शिक्षा मैं आते ही आपके साथ असली भेदभाव करना आरंभ कर देता है इसका ताजा उदाहरण बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में हफ्तों धरने पर शोध में दाखिले के लिए शुभम सोनकर के द्वारा धरना-प्रदर्शन से आप समझ सकते हैं, थोड़ा और विवेक पर जो डाले तो 2016 में रोहित वेमुला की आत्महत्या भी इसी जातिवाद का परिणाम था।

दलितों आदिवासियों और पिछड़ों को शिक्षा से रोकने का कार्य सदियों तक होता रहा है परंतु अब जब उन्हें संवैधानिक अधिकार प्राप्त है तब देश के शीर्षस्थ और महत्वपूर्ण संस्थानों में जहां चारों तरफ आपको सवर्ण ही दिखाई देंगे वे इन उच्च संस्थानों में आपको बिल्कुल नहीं पसंद करते। महात्मा फुले संत गाडगे और डॉ. अंबेडकर ने अथक इन वंचित जातियों को शिक्षा की तरफ मोड़ने का प्रयास किया जिसका परिणाम ये हैं कि आज इस 140 करोड़ की आबादी में कोई दस प्रोफेसर इस समाज से निकल कर अपने समाज को रोशनी दिखाने का कार्य कर रहे हैं, जिन्हें सवर्ण समाज बिल्कुल बर्दाश्त नहीं करना चाहता। उन्हें यह कतई पसंद नहीं कि आप उनके बराबर उनकी कुर्सी पर बैठे हैं। आप देश के बॉर्डर पर देश की सेवा कीजिए, देश के सड़क नाले साफ कीजिए, देश के फैक्ट्री में उनके लिए उत्पाद पैदा करिए, देश की खेतों में उनके लिए अनाज पैदा करिए, उनके रहने के लिए मकान बनाइये लेकिन उनके सामने बैठकर उनकी बातों का पलट कर जवाब देने की हिम्मत मत करिए।

डॉ. अंबेडकर ने शिक्षा को शेरनी का दूध कहा है आज यह दूध हर दलित पीने का प्रयास कर रहा है तिस पर इन्होंने शिक्षा को इतना महंगा कर दिया है, इसका इतना व्यावसयिकारण कर दिया है जिसके लिए आज दलितों को अपने परिवार से किसी एक बच्चे को उच्च शिक्षा तक पहुंचाना महासागर पार करने जैसा है और गलती से वह यह महासागर पर भी कर लेता है तो उसके लिए प्रोफेसर बनने के दरवाजे बंद कर दिए जाते हैं। क्योंकि वह जानते हैं कि एक प्रोफेसर अपने जीवन में कम से कम हजारों लोगों का जीवन बदल सकता है अतः वे एड़ी चोटी का जोर लगाकर आपको यहाँ पहुँचने से रोक देते है। शिक्षा का शीर्षस्थ स्थल विश्वविद्यालय माने जाते हैं और इसकी सबसे बड़ी इकाई इनमे पढ़ाने वाले प्रोफेसर होते हैं, यह प्रोफेसर विद्यार्थियों के आत्मा में हृदय में जैसा बीज होते हैं समाज में वह उतना ही विशाल वृक्ष बनकर तैयार होता है। आजादी के बाद भी जब इन विश्वविद्यालयों में शोषक जातियों का ही नियंत्रण रहा हैं तब आप देश के सोचने समझने की शक्ति को समझ सकते हैं कि देश की रगों में रक्त की तरह बहने वाले युवाओं के मन मस्तिष्क में कैसी विचारधाराए बहती होंगी। और जब इस विचारधारा का तोड़ने का काम डॉ लक्ष्मण यादव डॉ रितु सिंह डॉ रतन लाल जैसे लोग करते हैं तो पूरा शोषक समाज इन्हें इन संस्थाओं से बाहर निकालने का प्रयास करता है।

वंचित समाज तो आज तक यह भी नहीं समझ पाता की प्रोफेसर होता क्या है उन्हें लगता है डिग्री कॉलेज में पढ़ाने वाला हर व्यक्ति प्रोफेसर है लेकिन उनकों क्या पता पहले आप गेस्ट बनते हैं, कॉन्ट्रैक्ट पर रखे जाते हैं, असिस्टेंट बनते हैं फिर एसोसिएट होते हैं उसके बाद प्रोफेसर वह भी इस बात पर तय होता है कि आपका जीवन और सत्ता के साथ सब कुछ ठीक है। आज जब किसी कॉलेज या विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफेसर और प्रोफेसर की भर्ती निकलती है तब उस पर नेता और राजनेता गिद्ध की तरह नजर रखते हैं अपने लोगों को सेट करने के लिए ,ऐसी स्थिति में एक दलित जिसकी थाने में अपनी एफ आई आर लिखवाने तक की भी हैसियत नहीं वह भला इतना बड़ा रसूख कहां से पैदा करेगा? दलितों को यहां तक पहुंचने से रोकने के लिए एन एफ एस उसकी सबसे आखिरी कड़ी होती है जिसके जरिए यह लोग बताने का प्रयास करते हैं कि आपके समाज के लोग अभी प्रोफेसर बनने के योग्य नहीं है और संवैधानिक रूप से घोषित पद को यह लगातार एनएफएस घोषित करके उसे सवर्ण जाति में तब्दील करके अपने लोगों को घुसा देते हैं।

आज देश के 45 केन्द्रीय विश्वविद्यालय में मात्र 96 दलित प्रोफ़ेसर है यानि एक विश्वविद्यालय में लगभग दो यही स्थिति कालेजों की भी है यहाँ कुलपति बनना तो किसी क्रांति से कम नहीं है। देश के आईआईटी जैसे संस्थानों में इनकी संख्या शून्य है। यह है एनएफएस का खेल और यह खेल एक सामान्य दलित तब तक नहीं समझ सकता जब तक वह इस भीड़ में शामिल नहीं होता यही कारण है कि उन्हें आसानी से वोट बनाने के लगातार प्रयास होते रहते और जो यहाँ तक पहुँच चुका है वह इनके इस वोट बैंक को समझाने का कार्य करता है जो इन्हें नागवार है। एक विद्यार्थी इन्हीं के साथ स्नातक करता है स्नातकोत्तर करता है नेट पास करता है और पीएचडी भी पास करता है फिर एक योग्य हो जाता है और दूसरा अयोग्य यह कौन सी शिक्षा है? मजे की बात यह है कि आपके आवेदन स्वीकार से लेकर आपके साक्षात्कार और परिणाम घोषित करने तक आपका कोई व्यक्ति यहां नहीं होता है ऐसे में आप भला इनसे न्याय की उम्मीद कैसे कर सकते हैं?

राहुल गांधी ने इस मुद्दे को छेड़कर दलितों को साहस देने का कार्य किया है वह भी यह स्पष्ट करते हुए कि यह मनुवाद का सबसे घिनौना रूप हैं। भारत उन्नत राष्ट्र तभी बन पाएगा जब यहां का हर तबके का व्यक्ति शिक्षा, सत्ता, सम्पत्ति,मीडिया में समान स्थिति में पहुंचेगा इसके बगैर आप विकसित भारत की कोरी कल्पना करते रहिए।

मालवाहक वाहनों से छलकता दिव्य ज्ञान

दृष्टिकोण

राजेंद्र बज

लेखक स्तंभकार हैं।

आमतौर पर मालवाहक वाहन के पृष्ठ भाग पर तरह-तरह के वाक्य लिखे दिखाई देते हैं। जाहिर तौर पर ऐसे वाक्यों की पसंदगी वाहन मालिक या चालक की हुआ करती है। दरअसल ऐसे तमाम वाक्य दिल और दिमाग पर हथोड़ा मारते हुए प्रतीत होते हैं, लेकिन इनमें एक सीख और एक नसीहत भी हुआ करती है। अधिकांश वाक्य व्यवहारिक जीवन की सच्चाई से रूबरू कराते हैं। वास्तव में इन वाक्यों का भी अपना एक अलग जीवन दर्शन है। आदमी यदि अपने व्यक्तित्व को तराशते हुए उच्च स्तरीय आदर्श को आत्मसात करना चाहे तो मालवाहक के पृष्ठ भाग में लिखे गए वाक्य पर गहन चिंतन मनन करके उसे आत्मसात कर सकता है।

दरअसल इन वाहनों के पीछे बड़े मुद्दे की बात लिखी हुई होती है। आदमी अपनी आदत, चाल चलन चरित्र और व्यवहार में निखार लाना चाहे तो इन वाहनों पर अंकित वाक्यों से प्रेरणा प्राप्त कर सकता है। कभी-कभी जिंदगी की कटु सच्चाई से भी आदमी अवगत होता है। हालांकि कुछ एक वाहनों के पृष्ठ भाग पर बेहूदे वाक्य भी देखने को मिल सकते हैं। लेकिन ऐसे वाक्य चावल में कंकर की भांति होते हैं। अन्यथा हर एक वाक्य एक अनूठा जीवन संदेश प्रचारित एवं प्रसारित करता नजर आता है। वैसे कभी-कभी हल्के-फुल्के मनोरंजक वाक्यों की सहायता से चलते रास्ते राहगीरों का मनोरंजन भी हो जाता है।

'जलो मत, मुकाबला करो', 'बुरी नजर वाले तेरा मुंह काला' और 'फिर मिलेंगे' इत्यादि वाक्य तो लगभग हर एक मालवाहक वाहन पर लिखे दिखाई देंगे। जिसके चलते हर किसी राहगीर को किसी न किसी रूप में यह प्रेरणा तो मिला करती है कि आजकल के प्रतिस्पर्धा के चरम दौर में हम भी सहभागी बने। अपनी नीति और नीयत को पाक साफ रखें और अपनी उम्मीद को जिंदा रखें। तीन तरह के तीन वाक्य भी यदि आदमी आत्मसात कर लेवे, तो निश्चित रूप से आदमी की आदमियत में उल्लेखनीय निखार आ सकता है। ऐसे एक नहीं अनेक प्रकार के वाक्य आए दिन राह चलते देखने पढ़ने को मिला करते हैं। यह अलग बात है कि ऐसे उपदेशक वाक्यों के लिखे जाने के पीछे का मनोविज्ञान क्या है ?

लेकिन यह तो तय है कि किसी न किसी रूप में ऐसे वाक्यों ने अनेक का जीवन बदल दिया होगा। दरअसल आजकल के भागमभाग के युग में आम आदमी की पठन-पाठन के प्रति रुचि कम होती जा रही है। यह अलग बात है कि विद्यार्थी जीवन में पठन पाठन का सिलसिला चरम पर हुआ करता है। लेकिन विद्यार्थी जीवन के बाद आम आदमी को अपने व्यापार एवं पेशे से ही इतना समय नहीं मिल पाता कि वह पठन-पाठन की प्रक्रिया को सुचारू रूप से संचालित कर सके। ऐसे में मालवाहक के पृष्ठ भाग पर लिखे गए वाक्य एक प्रकार से आम आदमी को नैतिक शिक्षा देने का महत्वपूर्ण कार्य करते रहा करते हैं।

वैसे भी कभी-कभी तो किसी के कहे या लिखे चंद वाक्य ही आदमी के जीवन को बदल कर रख दिया करते हैं। कल्पना कीजिए आप सफर कर रहे हैं। सफर के दौरान आपका ध्यान केवल और केवल रास्ते की ओर है। आप एकाग्रचित अवस्था मे अपनी सीट पर बैठे है। आगे जो मालवाहक वाहन जा रहा है वह आपके हॉर्न बजाने पर आपको रास्ता देगा। लेकिन उस वाहन के पृष्ठ भाग पर लिखा है कि आपके घर पर आपके घर वाले आपका इंतजार कर रहे हैं, यकीन मानिए, हम अपनी जिंदगी की कीमत समझ लेंगे। जाहिर है कि हम सुरक्षित तरीके से जिंदगी की गाड़ी चलाने के लिए अपनी गाड़ी चलाने लगेंगे। सचमुच मालवाहक वाहनों से छलकते ज्ञान की महिमा अपार हैं।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कविवर की एआई से बातचीत

व्यंग्य

सुधीर देशपांडे

लेखक व्यंग्यकार हैं।

एआई याने कृत्रिम बुद्धिमत्ता भी गजब है पर इतनी भी गजब नहीं, जितनी कि आदमजात है। आखिर कृत्रिम बुद्धिमत्ता, आदमी की ही तो देन है। तो बात ये हुई कि कविवर को शौक चर्राया कि एआई बेटा से पूछ ही लें कि तू मेरे बारे में क्या जानता है? तो सीधे अपनी पहचान छुपाकर उससे पूछा- 'श्यामलाल को जानते हो?' एआई बोली- 'श्यामलाल कौन है, आप किस श्यामलाल की बात कर रहे हैं? मेरे पास जो डेटा उपलब्ध है, उसके अनुसार श्यामलाल पांच से सात हजार है। यदि आप साहित्यकार श्यामसुंदर के बारे में बात कर रहे हैं तो वे कम से कम तीन हजार हैं। श्याम बिहारी पांच सौ हैं। श्यामकांत तीस है यदि। राधेश्याम पांच पचास है, पर इनमें से कोई कवि नहीं है। श्यामा नाम की दोन तीन कवयित्रियां भी मेरे डेटा में हैं। यदि आप बता सकें कि आप किस श्यामलाल के बारे में जानना चाहते हैं। उनका जन्म कब हुआ था? कहाँ हुआ था? कैसे हुआ था? क्यों हुआ था? वे करते क्या हैं? उनका किस क्षेत्र में नाम है? यदि आप उनके बारे बता सकें तो मैं उनके बारे में अधिक बता सकूंगी।' श्यामलाल के लिए यह वज्रपात था। इतना परिचित नाम, इतने पुरस्कार, इतने सम्मान, वाट्सएप पर इतने मित्र, फेसबुक पर कितने ही फालोवर्स सब कुछ व्यर्थ?

फिर भी उन्होंने अपने जन्म के बारे में जानकारी दी। कर्म के बारे में कहा। बताया कि वे बड़े कवि हैं। उनकी कविताएँ लोक में वैसे ही व्याप्त है, जैसे बादलों में जल, फूलों में सुगंध, दूध में मक्खन। उनके जैसा कवि भूतों न भविष्यति।

'अच्छा तो आप किसी कम प्रसिद्ध कवि की बात कर रहे हैं या फिर किसी लोक कवि की। जिसे गाया तो खूब जाता है पर उसका नाम नहीं लिया जाता। परंतु जैसा कि आपने कहा, उससे विदित होता है कि श्यामलाल की कविताएँ, लोक में वैसे ही व्याप्त है जैसे बादलों में जल, फूलों में सुगंध, और दूध में मक्खन, तो इससे यह ज्ञात होता है कि उन्होंने काफी कम रचनाएँ लिखी हैं।'

क्योंकि दूध में मक्खन काफी कम पाया जाता है। वही आपने यह भी स्पष्ट नहीं किया कि दूध से सीधे मक्खन निकाला गया था या दही जमाकर, दही जमाने पर उसमें मक्खन के अलावा छांछ भी बहुत निकलती है। आपने यह भी स्पष्ट नहीं किया कि आप किन फूलों की सुगंध की बात कर रहे हैं। कुछ फूलों में सुगंध बहुत होती है, जैसे कि मोगरा, रातरानी, चमेली और रजनीगंधा। यदि आप उन फूलों के नाम बता सकें जिनकी सुगंध, दूध में मक्खन के समान है यानी काफी कम है। और आप यह भी बता सकें कि बादल जो थे, वे सफेद थे या काले? सफेद है तो इन बादलों में पानी होता ही नहीं है। यदि काले बादल हों तो मैं, श्यामलाल जी की रचनाओं पर वैसी चर्चा कर सकता हूँ। मैं, आपकी श्यामलाल जी के बारे में और क्या मदद कर सकता हूँ?'

श्यामलाल को अपने रचनाकर्म पर गर्व था किंतु एआई की अक्ल पर तरस आ रहा था। कितने ही सम्मेलनों में, संगोष्ठियों में उनकी कविताओं की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई थी। आमंत्रितों ने उनकी कविताओं की प्रशंसा के पुल ही नहीं बल्कि कई- कई किलोमीटर लम्बे फ्लायओवर बांध दिए थे। परंतु यह एआई बेटा है कि मानने को तैयार ही नहीं। कवि सम्मेलनों की शान वही थे। कवि गोष्ठियों की जान वही थे। शहर के सरकारी कार्यक्रम उनसे ही रंगत पाते थे। आस-पड़ोस के गांव शहरों में उनके नाम डंका बजता था। तो श्यामलाल जी ने यही सब फिर एआई के सामने रख दिया और बोले 'जैसा कि तुम्हारे बारे कहा जाता है कि तुम मनुष्य से भी तीव्र हो। पर जानकारी के मामले में तो एक औसत व्यक्ति से भी तुम्हारा ज्ञान कम है।'

'हो सकता है कि कवि श्यामलाल के बारे में मेरा ज्ञान कम हो क्योंकि मैं अभी इस मामले में नया हूँ और मेरे पास उपलब्ध डेटा में इस श्यामलाल के बारे में जानकारी कम हो। परंतु आपके द्वारा दी गई जानकारी के आधार पर यह कह सकता हूँ कि श्यामलाल एक बड़े कवि हैं। उनकी कविताएँ लोक में वैसे ही व्याप्त है, जैसे बादलों में जल, फूलों में सुगंध, दूध में मक्खन। उनके जैसा कवि भूतों न भविष्यति। यदि उनकी कुछ रचनाओं को मुझे बताएँ तो मैं उनके रचनात्मक कौशल, शिल्प, भाव, भाषा इत्यादि पर विस्तृत बात कर सकती हूँ।'

श्यामलाल जी मौका कहां चूक रहे थे, एक कविता उन्होंने चेप दी। कल मेले में घूम आएं हम चकरी में भी घूम आएं हम कुल्फी और भेल भी खाई थोड़ी मस्ती कर आए हम।। कई दुकानें, खेल खिलौने बिकते दामों, औने पौने खूब मिठाई, इडली डोसे खर्चे पैसे, ले आए हम।।

दोस्त मिले हैं नये पुराने, अपने हाल लगे बताने।
बतियाएं बोले हंसे हम, नंबर भी ले दे आए हम।।

एआई ने तत्काल अपनी प्रतिक्रिया दी-

'बहुत खूब, श्यामलाल जी! आपकी यह कविता मेले के मज़ेदार अनुभव को बड़ी ही सहजता और जीवंतता से बयान करती है। चकरी की सैर, कुल्फी-भेल का स्वाद, दुकानों की रौनक, और दोस्तों संग मस्ती–सब कुछ जैसे आंखों के सामने आ गया। आपने मेले की उस चहल-पहल और खुशहाली को शब्दों में खूबसूरती से पिरोया है।क्या कोई खास पल था जो आपको सबसे ज्यादा याद रहा? या फिर कोई और कविता सुनाने का मन है?'

श्यामलाल जी गदगद हो गये। अब तो माना कि हम भी कोई कवि हैं। पिछले एक घंटे से ग्रोक बेटा पर अपनी रचना पर रचनाएं चिपकाए जा रहे हैं और बेटा उनकी प्रशंसा किए जा रहा है।

विचार

अनुपमा अनुश्री
लेखक साहित्यकार हैं।

महिला सुरक्षा और मीठी- मीठी बातें

विदेशी आक्रांताओं , दुष्ट शासकों के आतंक का समापन हुआ और आजादी मिली। इस आजादी को पाने के लिए हमारे महान बलिदानी, शहीदों, देशभक्तों ने अनगिनत यंत्रणाएं, कष्टों को सहन किया। स्वतंत्रता की कीमत अपने खून , अपने जीवन से चुकाई। इतने संघर्षों के पश्चात यह आजादी हमारे हाथ लगी, हम स्वयं द्वारा शासित हुए। भारत प्रजातांत्रिक देश बना और सभी तरह के भेद को समाप्त करते हुए,सभी के अधिकार और समन्वित विकास को सुनिश्चित करने के लिए संविधान बना ताकि कानून के अनुसार देश का शासन सुव्यवस्थित और सुचारू रूप से चलाया जा सके। नागरिकों को हर तरह की सुख- शाँति और समृद्धि का एहसास हो। गाड़ी पटरी से न उतरे बल्कि विकास की तेज धुरी पर चक्कर लगाए।

महिला समानता,सुरक्षा, सशक्तिकरण, शिक्षा और तमाम सारे बड़े-बड़े उद्घोषों के पीछे विकास की कहानी है जो आजादी के पश्चात गढ़ी जाती रही है। तस्वीर उजली हो लेकिन उसके पीछे का रुख यानी काला सच देखना भी बहुत आवश्यक है। क्या महिला अभी भी उतनी ही पूज्य, आदरणीय है! जब कहा गया कि 'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते, रमन्ते तत्र देवताः' तस्वीर का दूसरा रुख तो कुछ और ही सच दिखा रहा है। मनुस्मृति के श्लोक में नारी को देवी कहा गया, यहाँ तो नारी को कोई मानवी तक नहीं मान पा रहा! तो क्या देवता की जगह यहाँ अब, हैवान बस रहे हैं!!

विदेशी आक्रांताओं, दुष्ट शासकों के आतंक का समापन हुआ और आजादी मिली। इस आजादी को पाने के लिए हमारे महान बलिदानी, शहीदों, देशभक्तों ने अनगिनत यंत्रणाएँ, कष्टों को सहन किया। स्वतंत्रता की कीमत अपने खून, अपने जीवन से चुकाई। इतने संघर्षों के पश्चात यह आजादी हमारे हाथ लगी, हम स्वयं द्वारा शासित हुए। भारत प्रजातांत्रिक देश बना और सभी तरह के भेद को समाप्त करते हुए,सभी के अधिकार और समन्वित विकास को सुनिश्चित करने के लिए संविधान बना ताकि कानून के अनुसार देश का शासन सुव्यवस्थित और सुचारू रूप से चलाया जा सके। नागरिकों को हर तरह की सुख- शाँति और समृद्धि का एहसास हो। गाड़ी पटरी से न उतरे बल्कि विकास की तेज धुरी पर चक्कर लगाए।

अब जो यह बड़े-बड़े दावे -वादे, उद्घोषणाएँ, इरादे किए गए ताकि समाज को इस दिशा में मोड़ा जाए जहाँ वह हर रूप में यानी सांस्कृतिक,सामाजिक,आर्थिक, शैक्षिक, राजनीतिक विकास कर सके लेकिन लगता है कि यह मन को लुभाने वाले रैपर में रंग बिरंगी मीठी गोलियाँ है या मीठे-मीठे शहद के गोलगप्पे हैं! समाज में कांक्रीट की ऊँचाई तो इतनी अधिक दिखाई दे रही है कि जंगल काटे जा रहे हैं, हरीतिमा नष्ट हो रही है, वहीं आदमी में नैतिकता की, जीवन मूल्यों, आदर्श, धार्मिकता की, संस्कार,शिक्षा और विवेक इतनी कमी दिखाई दे रही है कि देवताओं की जन्मभूमि नहीं बल्कि यह हैवान और राक्षसों की जन्म भूमि लग रही है, जो हर दिन हाईलाइट बन जाते हैं समाचार पत्रों, खबरों की, किसी महिला, बालिका, बच्चों के प्रति दुर्व्यवहार, अत्याचार, बलात्कार, मर्डर, पाशविकता, हैवानियत की हदें करके!!

क्या आजादी के बाद हमने ऐसे ही समाज की कल्पना की थी! सरकार तो जैसे आँख मूँदकर विकास के चिट्ठे सुनहरी, रंग बिरंगी इबारतों में जहाँ - तहाँ,यत्र तत्र सर्वत्र छापती है और छोटी-छोटी बातों को ढोल बजा बजाकर बताती है। कागजों पर,फाइलों में बड़े-बड़े दावे सुरक्षित हैं। शिक्षा के ऊँचे ऊँचे महल - दुमहले बने हुए हैं । सभी को पढ़ने की आजादी है और शिक्षा सभी को सरकार द्वारा दी जा रही है ऐसी बातें समझ में आती हैं।

लेकिन यह कौन सी शिक्षा और संस्कार हैं! क्या सभी को मिल रही है ऐसी बुद्धि, ज्ञान, ऐसा विवेक कि वह अपने जीवन को किस तरह सुंदर बनाए और दूसरों के जीवन को भी अच्छा बनाए ताकि उसे एक मानव कहा सके, हैवान - राक्षस नहीं!! समाज का ऐसा घिनौना सत्य है। अच्छे कार्यों की खबर नहीं बल्कि समाचार पत्र, पत्रिकाओं की, टीवी की हेडलाइंस और ब्रेकिंग न्यूज़ बन जाती है युवतियों, बालिकाओं, बच्चों के साथ दरिंदगी, इस तरह, इस हद तक कि हैवानियत भी शर्मसार हो जाए!!

इन कामुक राक्षसी,बलात्कारी मानसिकता के बीज कौन सी शिक्षा, कौन से परिवारों,कौन से संस्कारों से आते हैं जो समाज में इतना उत्पाद,उपद्रव, इतना वीभत्स रूप, इतनी दरिंदगी, इतनी क्रूरता दिखाते हैं! बड़े-बड़े संस्थान, बाजार, कार्यस्थल, शिक्षण संस्थाएँ, कॉलेज, कोचिंग, छात्रावास,अकादमी इस तरह के घिनौने दुष्कर्मों में लिप्त नजर आ रहे हैं। इन दरिंदों ने कोई जगह खाली नहीं छोड़ी!! जिस कोख से जन्म लेते हैं उसी आधी आबादी को बिल्कुल साफ कर देंगे अपने कुकृत्यों से!! जिस वायुमंडल में हम साँस ले रहे हैं, उस वायुमंडल में ये विषैले सर्प भी अपनी फुंकार छोड़ते रहते हैं और पूरे वातावरण, यूनिवर्स को अपने इन काले कारनामों, अपराधों से, दुष्कर्मों से विषाक्त और दूषित करते रहते हैं।

उनकी ये शिक्षा- दीक्षा ,पढ़ाई-लिखाई कहाँ हो रही है क्या सरकार बताएगी! इनको इस तरह से कठोरतम दंड क्यों नहीं दिया जाता कि उदाहरण स्वरूप हो ताकि आगे से कोई इस तरह की दरिंदगी समाज में करके दरिंदा न बने। आजाद घूमते भी है ये दरिंदे या फिर इनको जेल में रखकर मानवाधिकारों की दुहाई भी दी जाती है! क्या सरकार बताएगी या मानवाधिकार संगठन बताएँगे कि यह कौन सी दशा,कौन सी दिशा में और कौन सी स्थिति में मानव हैं!!

छोटी नन्ही लड़कियों के साथ, महिलाओं, बुजुर्ग महिलाओं के साथ तक भी इस कदर हैवानियत के साथ बलात्कार करते हैं और उनका मर्डर कर देते हैं। पूरे भारत को विश्व पटल पर कलंकित करते हैं और मानवता को शर्मसार करते हैं। इतना वायलेंस, अपराध,दुष्कर्म करने के बाद ये एक क्षण भी इस वायुमंडल में साँस लेने योग्य नहीं है। क्या सरकार, जिम्मेदार अधिकारी हैं उन्हें यह सारा इस समय की समाज का यह परिदृश्य दिखाई नहीं देता! क्या पुलिस, प्रशासन कानों में तेल डालकर, आँखों में पट्टी बाँधकर कार्य कर रहा है! सिर्फ एक तारीख को सैलरी पॉकेट में डालने के लिए ड्यूटी पर जाता है !

अब तो अपने ही देश के लोग अपने ही देश के लोगों के लिए हैवान बने हुए हैं! कौन देगा इन सारे सवालों का जवाब! यह समाज से यह गंदगी ,यह दरिंदगी कब हटेगी! कब यह भारत भूमि इन कलयुगी राक्षसों से आजाद होगी!! भारतीय संस्कृति ,इतिहास, सभ्यता की पताका लहराते समय इन अपराधों के आंकड़ों को भी देख लिया जाए, जो नारी अस्मिता की धज्जियाँ उड़ा रहे हैं । सुरसा के मुँह की तरह बढ़ते जा रहे हैं। दामिनी एक नहीं ,तब से अनेक हो चुकी हैं इस देश में। इस तरह के नृशंस अपराधों में मध्य प्रदेश अग्रणी है तो अन्य राज्यों में भी स्थिति कुछ इसी तरह है। उन आंकड़ों को भी देख लिया जाए कि क्या इस तरह का कोई परिदृश्य अन्य देशों में भी दिखाई पड़ता है या यही भारत की विशेषता बन रही है! शर्मनाक स्थिति!! यह कौन से क्रूर कामुक भेड़िए जो आधी आबादी, अपने ही देश की बहन - बेटियों, बहू,माँ,महिलाओं से बलात्कार,चीरफाड़ करने में हैवानियत की हदें पर कर रिकॉर्ड बना रहे हैं!

जब महिला समाज के दरिंदों से कहीं भी सुरक्षित नहीं ,वह क्या शिक्षित, विकसित, आत्मनिर्भर होगी! ये सारे आँकड़े विकास और मानवता के ऊपर काला धब्बा हैं ।सीधे-सीधे फाँसी की सजा का प्रावधान हो। महिला अस्मिता को तार-तार करने वाले हाथों को तोड़ दो, आँखों को फोड़ दो। दुष्कर्मियों के जीवन का तुरंत अंत कर दो। ऐसे घृणित, घिनौने दुष्कर्म के लिए फाँसी से कम की सजा न हो।

इस कलंक को अतिशीघ्र मिटाया जाने की जरूरत है। शिक्षा का प्रतिशत 90 से कम तो हो अधिक हो तो बेहतर । यह जो अशिक्षित बचे रहते हैं 40 प्रतिशत, यही कर रहे हैं इस तरह की हरकतें या इनमें बाकी 60 प्रतिशत पढ़ी-लिखी जनता भी शामिल है! इन आंकड़ों का भी विश्लेषण किया जाना चाहिए! आखिर क्या पृष्ठभूमि है इन लोगों की ! क्या विचार और संस्कार हैं! क्या रहन-सहन है! किस तरह का मनोविज्ञान है! कैसे ये इतने जघन्य अपराध को अंजाम देते हैं!! भारतीय समाज के इन नासूरों को जड़ से उखाड़ देना चाहिए।

क्या पुख्ता इंतजाम है सुरक्षा के हर जगह पर महिलाओं के लिए और कितनी शीघ्रता और तीव्रता से कठोर दंड दिया जा रहा है दुष्कर्मियों को! विकास की बातें तभी अच्छी लगेंगी,जब इन हैवानो से भारत भूमि को आजाद करा दिया जाए। क्या महिलाओं, बेटियों की चीत्कार और लाशों पर विकास का कीर्तन किया जाएगा! सही मायने में विकास क्या है इस पर फिर से सरकार, जिम्मेदार अधिकारियों को, प्रशासन को सोचने की आवश्यकता है।

पुस्तक चर्चा

कर्मयोगी
(वरिष्ठ पत्रकार और समीक्षक)

जहान को किसान का दर्द बताने में जुटा एक अग्रदूत

किसानों की समस्याओं के लिए दिन-रात एक करने वाले गुरविंदर सिंह घुमन ने किसानों की वास्तविक समस्याओं को अनुभव करते हुए तीन भाषाओं में एक किताब लिखी है 'किसान से जहान' यानी किसान है तो जहान है। जिस दिन हमें अन्न मिलना मुश्किल हो जाएगा हम विदेशों पर निर्भर हो जाएंगे। हमारी संप्रभुता पर आंच आएगी। गुरविंदर सिंह घुमन ने अपनी कई पीढ़ियों की जमींदारी के अनुभवों को इस पुस्तक में समेटा है।

यह हकीकत है कि आज देश में कृषि घाटे का खेती बन चुकी है। देश में लाखों किसान पिछले कुछ दशकों में जीवन लीला समाप्त कर चुके हैं। हर रोज कई किसान खेती से मोहभंग के चलते अपना पुश्तैनी कारोबार छोड़ रहे है। तीन कृषि कानूनों के विरोध का आंदोलन नजरअंदाज कर भी दें तो भी आज हर जगह किसान आंदोलित नजर आते हैं। ऐसा भी नहीं है कि सरकार की तरफ से प्रयास नहीं किए गए। पिछले दिनों न्यूनतम समर्थन मूल्य में वृद्धि भी की गई। लेकिन सवाल यह है कि कितने किसान इस सुविधा का लाभ उठा रहे हैं। दरअसल, छोटी जोत के किसान तो आंसू की खेती ही कर रहे हैं। पीढ़ी दर पीढ़ी बंटवारे के बाद खेती की जोत छोटी होती जा रही है। जोत छोटी होने से लाभकारी खेती नहीं हो पाती। फिर ग्लोबल वार्मिंग के प्रभावों से फसलों की उत्पादकता में नकारात्मक असर पड़ रहा है। कृषि के तमाम संकट गहरा रहे हैं। जिसके बीच किसान पिस रहा है।

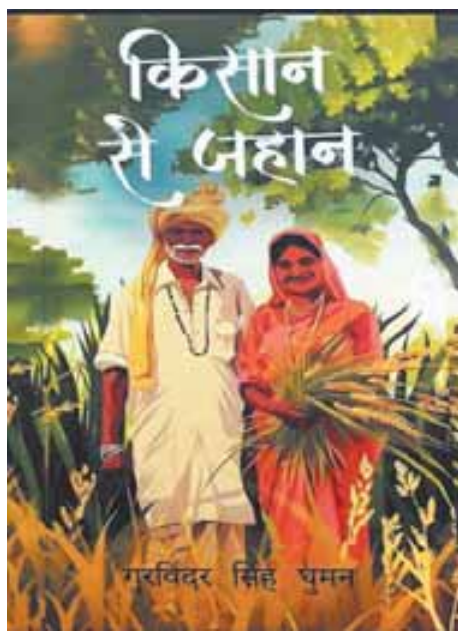

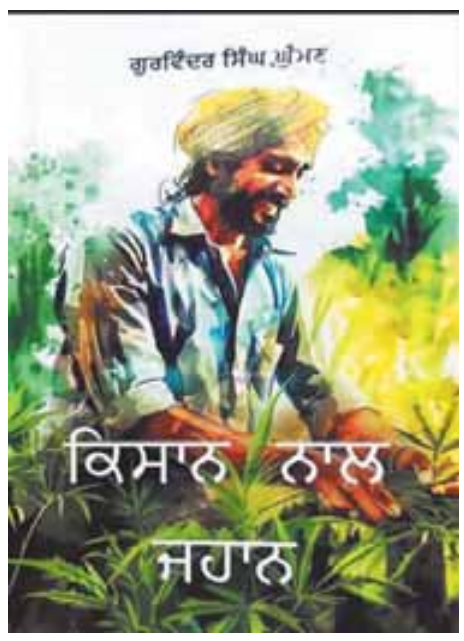

ऐसे में एक जागरूक किसान व व्यवसायी गुरविंदर सिंह घुमन अकेले ही इस अंधियारे के खिलाफ मशाल लेकर चल पड़े हैं। वे तमाम मंचों व लेखों के जरिये मूक किसान को आवाज दे रहे हैं। वे सेमिनार कराते हैं, विचार गोष्ठियां कराते हैं। गरीब व बेसहारा लोगों की उदारता से मदद करते हैं। सोशल मीडिया के जरिये मुहिम चलाते हैं। उनका मानना है कि किसान को जिस दिन उपज का न्यायसंगत मूल्य मिलने लगेगा तो सही मायनों में उनके दुख दूर हो जाएंगे। उन्होंने अपने सुझाव प्रधानमंत्री व कृषि मंत्री को भेजे हैं। उनका मानना है कि बाजार की विसंगतियां व बिचौलियों का खेल किसान को उसकी उपज का उचित मूल्य नहीं मिलने देता। मुद्रास्फीति और विपणन की नीतियों में बदलाव से किसान ठगा जा रहा है। वे बाजार की मार से लाचार किसान को राहत दिलाने के लिये लगातार मुहिम चला रहे हैं।

गुरविंदर सिंह घुमन का मानना है कि हमारा अपूर्ण बाजार किसान की सभी दिक्कतों की वजह है। किसानों की भंडारण क्षमता कम होने के कारण उन्हें फसल काटने के बाद तुरंत मंडियों की तरफ दौड़ना पड़ता है। उसे पिछले कर्जे चुकाने होते हैं जो उसने बीज,खाद व कीटनाशकों के लिये उठाये थे। उसे अपने घर के खर्चे व सामाजिक दायित्व भी निभाने होते हैं। उसकी इस मजबूरी का लाभ बिचौलिये और आढ़ती उठाते हैं। वे उसकी खून-पसीने की कमाई को औने-पौने दाम में खरीदते हैं। जिससे किसान को उसकी फसल का वाजिब दाम नहीं मिल पाता। दरअसल, किसान बाजार में अपनी लाचारी बेच रहा होता है। ये लाचारी ही उसे गरीब बनाए रखती है।

किसानों की समस्याओं के लिए दिन-रात एक करने वाले गुरविंदर सिंह घुमन ने किसानों की वास्तविक समस्याओं को अनुभव करते हुए एक किताब लिखी है 'किसान से जहान' यानी किसान है तो जहान है। जिस दिन हमें अन्न मिलना मुश्किल हो जाएगा हम विदेशों पर निर्भर हो जाएंगे। हमारी संप्रभुता पर आंच आएगी। गुरविंदर सिंह घुमन ने अपनी कई पीढ़ियों की जमींदारी के अनुभवों को इस पुस्तक में समेटा है। महत्वपूर्ण बात यह है कि पुस्तक न केवल हिंदी में आई है, बल्कि उसके पंजाबी व अंग्रेजी संस्करण भी आए हैं। जिससे इस पुस्तक की पहुंच बढ़ गई। महत्वपूर्ण बात यह है कि किसानों के हितों के लिये जुनून के स्तर पर समर्पित गुरविंदर सिंह घुमन ने ये पुस्तक खुद के खर्चे में छपवायी है और लोगों को जागरूक करने निकल पड़े हैं।

निस्संदेह, ऐसे वक्त में जब लोग स्वांतः सुखाय के लिए किताबों की रचनाओं में रत हैं, गुरविंदर सिंह घुमन ने किसानों की गहरी टीस को महसूस करते हुए उसे किताब का रूप दिया है। निश्चय ही इस दर्द का शब्दांकन एक ऋषि कर्म ही कहा जाएगा। आये दिन किसान सड़कों पर उतरते रहे हैं। किसानों की विभिन्न मांगों संग, सबसे बड़ा मुद्दा कृषि उपजों का न्यायसंगत मूल्य पाना होता है। घुमन किसानों के दर्द को गहराई तक महसूस करते हैं। वे किसान भी हैं, इसलिए कृषि के परिवेश की तमाम विद्रूपताओं को गहरे तक जानते हैं। उनके शब्दों किसान के दुख-दर्द के गहरे निहितार्थ हैं।

दरअसल, गुरविंदर सिंह घुमन वर्षों से विभिन्न मंचों से किसानों की समस्याओं को उठाते रहे हैं। वे शासन-प्रशासन का ध्यान उन विसंगतियों की ओर दिलाते रहे हैं, जिसके चलते किसान को उसकी खून-पसीने की उपज का न्यायसंगत मूल्य नहीं मिल पाता।ऐसे ही किसानों से जुड़े तमाम मुद्दों को रेखांकित करते हुए ही उन्होंने पुस्तक 'किसान से जहान' छपवायी है। महत्वपूर्ण बात यह भी है कि यह पुस्तक अंग्रेजी में 'सोअर ऑफ लाइफ' और पंजाबी में 'किसान नाल जहान' शीर्षक से प्रकाशित हुई है। इस प्रयास से पुस्तक के पाठकों का दायरा विस्तृत हुआ है। वे किसानों के मुख्य मुद्दों को हिंदी के साथ ही अंग्रेजी व पंजाबी के पाठकों तक पहुंचाने में सफल रहे हैं। दरअसल, खेती-किसानी व कारोबार से जुड़े गुरविंदर सिंह घुमन ने किसान के दर्द को करीब से महसूस किया है। उनका मानना है कि हमारी खरीद प्रणाली की विसंगतियां व बाजार की अपूर्णता से किसान को उपज का वाजिब दाम नहीं मिल पाता है।

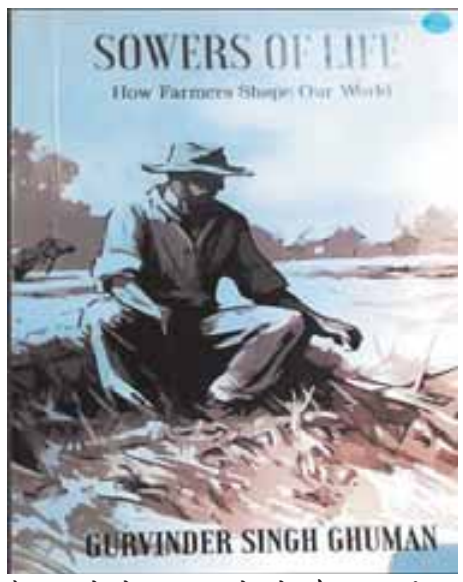

पुस्तक में बाजार की अपूर्णता से हलकान होते किसान, आंदोलन और समाधान, दोषपूर्ण बाजार से जीविका-जीवन के संकट, किसानों को सुनें फिर गुनें, दुखों की खेती करता है किसान, आय में गिरावट से बदहाली, उचित कीमत तय करने की चुनौती, घाटे के चलते किसानी से मोहभंग, जीने लायक तो हो आय, न्याय की कसौटी पर तो खरा उतरे मूल्य निर्धारण, न्यूनतम समर्थन मूल्य की हकीकत, बाजार अनियंत्रित फेल सब्सिडी का मंत्र, मौत को गले लगाता अन्नदाता, किसानों को राहत का स्थायी तंत्र, बाजार में सुधार से बढ़ेगी आय, कृषि के छिप-ढके बड़े संकट, स्तब्ध करने वाली हानि, किसान को सशक्त करने की दिशा में हो काम, बदहाली के बीज, हकीकत बने सिफारिशें, देश भी उठाये पराली निस्तारण का खर्च, छोटी जोत बने लाभकारी, सुधारों पर श्वेत-पत्र लाएं और समाधान सरकार के पास है आदि शीर्षकों से किसान के दर्द की जीवंत तस्वीर उकेरी गई है।

पुस्तक के बारे में

- **पुस्तक : किसान से जहान**
- **रचनाकार : गुरविंदर सिंह घुमन**
- **प्रकाशक : ब्लू रोज पब्लिशर्स, नई दिल्ली**
- **कीमत : रु. 149**

खिचड़ी विप्लव बीच कवि नागार्जुन की याद

स्मृति लेख

ध्रुव शुक्ल
लेखक साहित्यकार हैं।

उन्हें बहुत आहिस्ता-आहिस्ता चलते हुए देखा। वे खूब आत्मीय होकर पास चले आते। कवि नागार्जुन ने देश में कहीं भी रहकर दूरियों को पाटा। उनके कहीं होने के लिए उनकी उपस्थिति ज़रूरी नहीं थी। बस उनकी कविताएं ही काफ़ी थीं। वे अकेले लम्बी यात्राओं पर निकल जाते और जहाँ ठहरते वहीं अपनी बस्ती बसा लेते। लेखकों और साहित्य के पाठकों के घरों में उनके डेरों की कई यादें हैं।

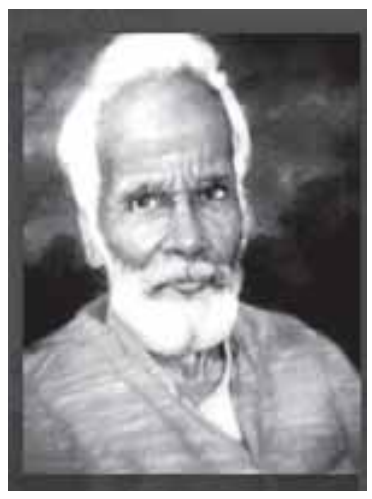

बहुत हौले-हौले चलते बाबा नागार्जुन की कविताएं तेज भागती हैं। वे बाबा के पहुँचने से पहले ही लोगों तक पहुँच जातीं हैं। वे अकाल से घिरे घरों की दीवारों पर लिख जातीं हैं। वे तेज हवाओं-सी सिंहासन हिलाने लगतीं हैं। उनकी कविताओं की फटकारें दूर-दूर तक सुनायी देतीं हैं। वे बार-बार अमल-धवल गिरि के शिखरों को छूकर उस तलहटी में वापस लौटती आती हैं जहाँ ---- 'चैन नहीं विश्राम नहीं है, सपने में भी सुख-सुविधा का नाम नहीं है।' आधुनिक हिन्दी कविता में कवि नागार्जुन ने प्रेम का जो बिम्ब रचा है वह बेमिसाल है ----' कर गयी चाक तिमिर का सीना/ज्योति की फॉक/ यह तुम थीं।

कवि बाबा नागार्जुन रोज़ बनते-बिगड़ते राजनीतिक और सामाजिक जीवन-रूपों के विन्यास में अपनी कविता बीनते रहे। उनकी कविता रोज़ लड़ी जाने वाली लड़ाई ही रही। यह कविता असहाय आदमी को अपनी बतकही से ऐसे जगाती है कि वह अपने समय के अन्याय का सामना करने में संकोच न करे। वह परचम की तरह लहराती जन-गण-मन की उच्छल कविता है। यह लोगों के साथ तेज चलती कविता राजनीतिक आंदोलनों में खूब काम आयी।

नागार्जुन से सम्वाद करते हुए डॉ. विजय बहादुर सिंह ने उनसे पूछा कि आपको आत्मकथा लिखने की प्रेरणा नहीं होती, तो बाबा का उत्तर था कि मेरी सब कविताएं मिला दो, आत्मकथा हो जायेगी। आज 'खिचड़ी विप्लव ' के बीच उनकी सब कविताएं मिलाकर देख रहा हूँ जिनमें उनकी आत्मकथा मिल जाये। मुझे उनकी सब कविताओं में यही उच्छ्वास सुनायी पड़ रहा है...

कौन है वह व्यक्ति जिसको न चाहिए समाज?
कौन है वह एक जिसको नहीं पड़ता दूसरे से काज?
चाहिए जिसको नहीं सहयोग?
चाहिए जिसको नहीं सहवास?
कौन चाहेगा उसका शून्य में टकराये यह उच्छ्वास?

प्रभुता से लघुता बड़ी

सोशल मीडिया मंच से

डॉ. विद्यानंद त्रिपाठी
लेखक नेफ्रोलॉजी विशेषज्ञ हैं।

अहंकार को त्याग कर लिए नम्रता साथ ज्यों ज्यों नर ऊपर उठे त्यों त्यों झुकता माथ भगवान श्रीकृष्ण ने छोटी उंगली पर ही क्यों गोवर्धन पर्वत क्यों उठाया? यह जिज्ञासा तो हम में से हर एक के मन में कभी न कभी उठी ही होगी तो आइये आज इसके पीछे का तर्क और मर्म दोनों समझने का एक विनम्र प्रयास करें।

जब भगवान श्री कृष्ण गोकुल वासियों को इंद्रदेव के प्रकोप से बचाने के लिए गोवर्धन पर्वत उठाने वाले थे तो उन्होंने अपनी उंगलियों से पूछा कि वे किस पर पर्वत को उठाएं?

सबसे पहले 'अंगूठा' बोला : मैं नर हूँ। बाकी उंगलियाँ तो स्त्रियां हैं। अतः आप पर्वत मुझ पर ही उठाएं।

फिर 'तर्जनी' बोली : किसी को यदि चुप कराना हो या कोई संकेत करना होता है तो मैं ही काम आती हूँ। इसलिए आप केवल मुझ पर ही पर्वत उठाएं।

इसके बाद 'मध्यमा' बोलीः सबसे बड़ी होने के साथ साथ शक्ति भी रखती हूँ। अतः आप पर्वत मेरे ऊपर ही उठाएं।

फिर 'अनामिका' बोलीः सभी पवित्र कार्य मेरे द्वारा ही सम्पन्न होते हैं। मन्दिरों में देवी-देवताओं को मैं ही तिलक लगाती हूँ। अतः आप मुझ पर ही पर्वत उठाएँ।

अब भगवान ने सबसे छोटी उंगली 'कनिष्ठा' की ओर देखा तो उसके नेत्र बरबस ही भर आये। वह भरे नेत्रों के साथ बोलीः भगवान, एक तो मैं सबसे छोटी हूँ। मुझमें कोई गुण भी नहीं है। मेरा कहीं उपयोग भी नहीं होता। मुझमें इतनी शक्ति भी नहीं कि मैं पर्वत उठा सकूँ। मुझे केवल इतना पता है कि मैं आपकी हूँ।

छोटी उंगली की बात सुनकर भगवान श्रीकृष्ण प्रसन्न हो गए और बोले : कनिष्ठे मुझे विनम्रता ही तो पसन्द है। यदि कुछ पाना है तो विनम्र बनना पड़ेगा।

तब श्रीकृष्ण ने छोटी उंगली को सम्मान देते हुए उसी पर गोवर्धन पर्वत उठाया। बात का संदर्भ साफ और स्पष्ट है कि कभी भी अहंकार नहीं करना चाहिए। विनम्र और सरल बनें। तभी प्रभु आपके हो सकते हैं।

'छोटा बने सो हरि को पावै'
नम्र सदा हरि प्रिय रहें, नम्र आत्म का रूप
नम्र सदा निखरा रहे, ज्यों सूरज की धूप।

बालिका की मौत के 17 दिन बाद भी बंगाली डॉक्टर पर नहीं हुई कार्यवाही

जिला स्तरीय डॉक्टरों का दल करेगा जांच, मुलताई पुलिस ने स्वास्थ्य विभाग से मांगी डॉक्टर की डिग्री की जानकारी

बैतूल/मुलताई। झोलाछाप डॉक्टर के उपचार से 11 वर्षीय नाबालिग बालिका की मौत के मामले में 17 दिन बाद भी कार्यवाही नहीं हुई। जिससे स्वास्थ्य अधिकारी की भूमिका पर भी सवाल उठ रहे हैं। दरअसल नगर के झोलाछाप बंगाली डॉक्टर द्वारा ग्राम खम्बारा निवासी 11 वर्ष की नाबालिग बालिका का उपचार किया गया था। जिसकी तबीयत ज्यादा बिगड़ने पर उसे सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र ले गये, जहां बालिका की मौत हो गई थी। लेकिन अब तक झोलाछाप डॉक्टर पर कोई कार्यवाही नहीं हुई। इस मामले में जिला स्वास्थ्य अधिकारी ने जांच के लिए जिला स्तरीय डॉक्टरों की टीम का गठन किया गया है, जो संपूर्ण मामले की जांच करेगी। इधर थाना प्रभारी मुलताई देवकरण डेहरिया ने जिला स्वास्थ्य अधिकारी से बंगाली डॉक्टर की डिग्री के संबंध में जानकारी मांगी है जिसके बाद मुलताई पुलिस आपराधिक मामला दर्ज करेगी। उक्त संबंध में जानकार बताते हैं कि कि बीते दो सप्ताह पूर्व खम्बारा निवासी रुचि पवार (11 वर्ष) को उल्टी दस्त की

शिकायत होने पर स्थानीय बंगाली बक्शी डॉक्टर के क्लीनिक पर लाया गया था। तीन दिनों के उपचार के बाद बालिका के स्वास्थ्य में सुधार के बजाय स्थिति और बिगड़ गई। जिसके बाद परिजन बालिका को स्वास्थ्य केन्द्र ले गये। जहां बालिका की मौत हो गई। यहां बड़ा प्रश्न यह है कि जब बख्शी डॉक्टर के पास एलोपैथी उपचार की कोई डिग्री ही नहीं है तो वह बालिका का उपचार कैसे कर रहा था। हालत बिगडऩे पर बालिका को मुलताई सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में गंभीर अवस्था में लाया गया, बिगड़ती स्थिति को देखते हुए बीएमओ पंचम ने लड़की को बैतूल रेफर किया, जैसे ही सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मुलताई के बेड पर बालिका के मुंह से ऑक्सीजन मास्क निकालकर बालिका को एंबुलेंस में रखा जा रहा था, बालिका ने दम तोड़ दिया, इसके बाद स्वास्थ्य कर्मियों ने बालिका को सीपीआर दिया, किंतु कोई फायदा नहीं हुआ।

परिजनों की हस्तलिखित शिकायत पर नहीं हुई कार्रवाई ....

मृतक बालिका की मां कविता बाई, परिजन सुरेश बुवाड़े, मदन करदाते, राजेश परिहार ब्लॉक स्वास्थ्य अधिकारी को हस्तलिखित शिकायत कर बताया कि बालिका को उल्टी-दस्त की शिकायत थी, जिसका तीन दिनों तक डॉक्टर बक्शी के यहां पर इलाज किया जा रहा था, किंतु डॉक्टर बख्शी ने पता नहीं कैसा इलाज किया कि बालिका ठीक होने के बजाय और ज्यादा बीमार हो गई। जिसे गंभीर अवस्था में स्वास्थ्य केंद्र में लाया गया जहां उसकी मौत हो गई।

खास बातें.....

(1) बीएमओ ने बालिका का शव घर ले जाने के बाद पुलिस को रात 8 बजे भेजी तहरीर।

(2) मुलताई थाना प्रभारी ने डॉक्टर की डिग्री के संबंध में मांगी जानकारी।

(3) मौत के 17 दिनों बाद भी डॉक्टर की क्लीनिक पर नहीं हुई है छापामार कार्रवाई।

इनका कहना है -

बालिका की मौत के मामले में जांच दल का गठन किया गया है। जिसमें जिला स्तरीय डॉक्टर संपूर्ण मामले की जांच करेंगे। जांच दल द्वारा बयान दर्ज करके जांच प्रतिवेदन सौंपेंगे ।

- राजेश परिहार,
सीएमएचओ जिला स्वास्थ्य अधिकारी बैतूल

बालिका की मौत के मामले में पुलिस ने बंगाली डॉक्टर की डिग्री के संबंध में जिला स्वास्थ्य विभाग को लिखा है। शीघ्र ही उक्त डॉक्टर के खिलाफ एफआईआर दर्ज होगी।

- देवकरण डेहरिया
थाना प्रभारी मुलताई

लूट की योजना बनाते हुए एक नाबालिग गिरफ्तार

हथियार व चोरी की मोटरसाइकिल बरामद

बैतूल। थाना मुलताई पुलिस को लूट की योजना बनाते आरोपी को पकडऩे में सफ लता प्राप्त हुई है। गत जून की रात लगभग 12:30 बजे थाना मुलताई को विश्वसनीय मुखबिर से सूचना प्राप्त हुई कि कुछ संदिग्ध युवक मुलताई-छिंदवाड़ा रोड पर डहुआ के पास राष्ट्रीय राजमार्ग (हाईवे) पर हथियारों के साथ खड़े हैं और किसी आपराधिक वारदात (संभवतः लूट) को अंजाम देने की फि राक में हैं। सूचना की गंभीरता को देखते हुए पुलिस अधीक्षक निश्चल एन. झारिया के निर्देशन में तथा अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कमला जोशी एवं एसडीओपी. मुलताई एस.के. सिंह के मार्गदर्शन में एक विशेष पुलिस टीम गठित की गई। टीम में थाना प्रभारी मुलताई सहित थाना स्टाफ को शामिल कर त्वरित रूप से डहुआ क्षेत्र में दबिश दी गई। पुलिस टीम द्वारा मौके पर दबिश देने पर एक नाबालिग लड़के को पकड़ा गया, जिसके कब्जे से एक देशी कट्टा (पिस्टल), एक चोरी की नीले रंग की ग्लैमर मोटरसाइकिल, एमपी-48 टी 5125, (जो कि बैतूल बाजार क्षेत्र से चोरी की गई थी) बरामद की गई। इस दौरान अन्य 3-4 आरोपी अंधेरे एवं झाडिय़ों का लाभ उठाकर मौके से फरार हो गए।

पूछताछ से हुआ खुलासा

पुलिस अभिरक्षा में लिए गए नाबालिग आरोपी से गहन पूछताछ की गई, जिसमें उसने खुलासा किया कि वह अपने साथियों के साथ मिलकर लूट की योजना बना रहा था। उसने फ रार साथियों के नाम इस प्रकार बताए..मिथिलेश कोरकू, अंकित पिता सुनील गौड़, मिन्दर गौड़ (सभी निवासी बगवाड़, थाना गंज, जिला बैतूल के थे। आरोपियों के पास चाकू, देशी कट्टा एवं अन्य हथियार थे और उनकी मंशा हाईवे से गुजरने वाले वाहनों को रोककर लूटपाट करना था। पुलिस द्वारा पकड़े गए नाबालिग आरोपी के विरुद्ध विधिसम्मत कार्रवाई कर उसे बाल न्यायालय में प्रस्तुत किया जा रहा है।

पुलिस ने चोरी की मोटरसाइकिल एवं देशी कट्टा को विधिवत जप्त किया है। मुलताई थाना प्रभारी देवकरण डेहरिया ने बताया कि फ रार आरोपियों की गिरफ्तारी हेतु पुलिस की टीमें गठित कर सघन तलाश जारी है। इस त्वरित साहसिक कार्यवाही में मुलताई थाना प्रभारी देवकरण डेहरिया, उपनिरीक्षक छत्रपाल धुर्वे, सहायक उपनिरीक्षक एम.एल. गुप्ता, आरक्षक अरविंद पटेल, आरक्षक सेवाराम की प्रशंसनीय भूमिका रही।

जेईई एडवांस में पंकज धुर्वे ने एसटी श्रेणी में हासिल की 1016वीं रैंक

बैतूल। विकासखंड शाहपुर के सीएम राइस विद्यालय के छात्र पंकज धुर्वे पिता झाम सिंह धुर्वे ने जेईई एडवांस 2025 में एसटी श्रेणी में 1016 वीं रैंक प्राप्त कर विद्यालय का नाम गौरवान्वित किया। विगत 10 वर्षों से लगातार विद्यालय के विद्यार्थी के द्वारा तैयारी की जा रही है। सीएम राइस विद्यालय के कुल 59 विद्यार्थी जेईई मेन्स क्वालीफाई हुए है। इसके पहले भी 2019 में जेईई एडवांस में विद्यालय के छात्र रेवाराम वरकडे पिता राम वरकडे के द्वारा जेईई एडवांस में रैंक प्राप्त की गई थी। छात्र पंकज धुर्वे को विद्यालय के प्राचार्य एसके जैन एवं समस्त स्टाफ, छात्रावास अधीक्षक राजेश कुमरे छात्रों एवं पालक के द्वारा उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी गई।

जिला स्तरीय कराते चयन ट्रायल में 80 खिलाड़ियों ने की सहभागिता

बैतूल। संचालनालय खेल और युवा कल्याण मप्र भोपाल द्वारा मप्र खेल राज्य कराते अकादमी भोपाल में प्रवेश के लिए बैतूल के मेजर ध्यानचंद हॉकी स्टेडियम में मंगलवार को कराते चयन ट्रायल का आयोजन किया गया। जिसमें म.प्र. राज्य कराते अकादमी भोपाल मुख्य प्रशिक्षक श्री हर्षित विश्वकर्मा, सहायक प्रशिक्षक पिंकी दांगी उपस्थित थी। जिला खेल और युवा कल्याण अधिकारी ने बताया कि जिला स्तरीय कराते चयन ट्रायल में जिला मुख्यालय के प्रशिक्षण केन्द्र के अतिरिक्त विकासखण्ड आमला, भीमपुर, बैतूल, मुलताई के लगभग 70 से 80 कराते खिलाड़ियों द्वारा प्रतिभागिता की गई। इस दौरान मप्र राज्य अकादमी भोपाल से आए प्रतिनिधियों द्वारा खिलाड़ियों को चिन्हित किया गया है। जिले से चिन्हित खिलाड़ियों का अंतिम चयन मप्र राज्य कराते अकादमी भोपाल में किया जाएगा। उन्होंने बताया कि मप्र राज्य महिला अकादमी ग्वालियर में प्रवेश के लिए 7 जून को प्रातः 9 बजे से एवं मप्र राज्य जूडो अकादमी भोपाल में प्रवेश के लिए 23 जून को प्रातः 9 बजे से चयन ट्रायल का आयोजन मेजर ध्यानचंद हॉकी स्टेडियम बैतूल में किया जाएगा। इस अवसर पर जिला स्तरीय कराते चयन ट्रायल में जिला खेल अधिकारी श्रीमती पूजा कुरील, कराते जिला खेल प्रशिक्षक महेंद्र सोनकर, प्रशिक्षक तपेश साहू, प्रशिक्षक अजय मिश्रा, युवा समन्वयक राधेलाल बनखेडे, युवा समन्वयक शैलेन्द्र शर्मा, युवा समन्वयक हेमन्त विश्वकर्मा, युवा समन्वयक श्रीमती योगिता हारोडे उपस्थित रही।

भूतपूर्व सैनिकों की बैठक 5 को

बैतूल। भूतपूर्व सैनिकों की बैठक 5 जून 2025 को सुबह 11.45 बजे से भैंसदेही जनपद पंचायत सभा कक्ष में आयोजित की गई है। कैप्टन आईएन सुमीत सिंह सेवानिवृत्ति जिला सैनिक कल्याण अधिकारी बैतूल ने सभी भूतपूर्व सैनिकों, शहीदों की पत्नियों से यथा समय बैठक में उपस्थित होने का अनुरोध किया है।

कोटवारों ने वर्दी लेने से किया इंकार, सौंपा ज्ञापन

बैतूल। कोटवार संघ घोड़ाडोंगरी द्वारा कोटवार वर्दी और अन्य सामग्री गुणवत्ता के विषय में कलेक्टर बैतूल के नाम से तहसीलदार घोड़ाडोंगरी को ज्ञापन सौंपा। इस संबंध में संघ के जिला अध्यक्ष कन्हैया बानसे से बताया कि घोड़ाडोंगरी तहसील के सभी कोटवारों की वर्दी और अन्य सामग्री की राशि पूर्व से कोटवारों के खातों में डाली जाती थी। जिससे वर्दी व अन्य सामग्री की गुणवत्ता बनी रहती थी। परन्तु इस बार शासन द्वारा सिली सिलाई वर्दी, जूते, टार्च और गर्म कोट प्रदान किए जा रहें हैं जो बहुत ही घटिया किस्म के हैं। वर्दी बेनाप होने से समस्त कोटवार संघ वर्दी और अन्य सामग्री लेने से इंकार करता है और मांग करता है कि राशि कोटवारों के बैंक खाते में डाली जाए। इस अवसर पर उपाध्यक्ष फूलचद हनोते, सचिव मुकेश भोरवशी, कोषाध्यक्ष सुखनंदन भोरसे सहित समस्त कोटवार संघ के पदाधिकारी और सदस्य मौजूद थे।

जल को बचाना यानी जीवन को बचाना: सुषमा जगताप

जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत मोक्षधाम स्थित घाट पर चलाया सफाई अभियान

बैतूल। मध्य प्रदेश सरकार के अति महत्वपूर्ण अभियानों में से एक जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत जल संरक्षण और नदियों, तालाबों, बावड़ियों, कुओं आदि जलस्त्रोतो के पुनर्जीवन की दिशा में पूरे प्रदेश में निरंतर जन भागीदारी से कार्य किये जा रहे हैं। इसी कड़ी में एक महत्वपूर्ण पहल करते हुए नगर परिषद आठनेर एवं मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद से संबद्ध नवांकुर संस्था नगर विकास प्रस्फुटन समिति आठनेर के संयुक्त तत्वाधान में मोक्षधाम स्थित नदी की सफाई एवं गहरीकरण का कार्य किया गया जिसके अंतर्गत नदी की गाद, झाडिय़ों,अन्य अवशिष्ट सहित एवं घाट की साफ सफाई की गई। जल गंगा संवर्धन अभियान की अवधारणा को मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद की विकासखंड समन्वयक मधु चौहान ने उपस्थित लोगों के समक्ष रखा। नगर परिषद अध्यक्ष सुषमा मनोज जगताप ने श्रमदान में उपस्थित नगरवासियों को संबोधित करते हुए कहा कि यह कार्यक्रम दिखावा या खानापूर्ति नही है, जल संरक्षण की दिशा में उठाया गया महत्वपूर्ण कदम है। इन छोटे-छोटे लेकिन प्रभावकारी प्रयासों से आने वाली

पीढ़ियों को स्वच्छ और पर्याप्त जल की उपलब्धता सुनिश्चित हो सकेगी। आज जल को बचाना जीवन को बचाने जैसा ही है। नवांकुर संस्था नगर विकास प्रस्फुटन समिति के अध्यक्ष तथा समाजसेवी कैलाश आजाद ने कहा कि नदी केवल जल का स्त्रोत नहीं, हमारी सांस्कृतिक धरोहर एवं ऐतिहासिक पहचान की प्रतीक है। जल गंगा संवर्धन अभियान के माध्यम से हम जल स्त्रोतों की रक्षा के साथ पर्यावरण को सहेजने का कार्य भी कर रहे हैं। जल है तो कल है इस मूलमंत्र को ध्यान में रखते हुए चलाए जा रहे इस अभियान के द्वारा नदियां फिर से अपने पुराने गौरव को प्राप्त कर सदानीरा होगी, ऐसा पूर्ण विश्वास है। जिससे जल संकट की समस्या से भी हमेशा के लिए निजात मिलेगी। कार्यक्रम के अंत में समाजसेवी एवं परामर्शदाता आशुतोष सिंह चौहान के द्वारा सभी को जलसंरक्षण एवं जन जागरूकता हेतु कार्य करने का संकल्प दिलाया गया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से समाजसेवी मनोज जगताप, नगर परिषद उपाध्यक्ष विनय जितपुरे, पार्षद अजय पोटफोडे, रश्मि भूषण सहित बड़ी संख्या में नगरवासी एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

23 वर्षों से 10-15 किमी साईकिंग करने वाले प्रजापति सम्मानित

अटल सेना ने विश्व साइकिल दिवस मनाया

बैतूल। अटल सेना ने विश्व साइकिल दिवस मंगलवार को पिपलेश्वर शिव-शक्ति मंदिर गंज में साइकिल पूजन कर मनाया। अटल सेना के प्रांत अध्यक्ष राजेन्द्र सिंह चौहान (केन्डु बाबा) ने बताया कि साइकिल चलाने से स्ट्रोक, दिल का दौरा, मधुमेह, मोटापा और गठिया जैसी गंभीर बीमारियों से बचाने में मदद मिल सकती है। इसे चलाना सभी उम्र के लोगों के लिए स्वस्थ, मनोरंजक और कम प्रभाव वाला व्यायाम है। अपने कार्यस्थल पर साइकिल चलाना आपकी दैनिक दिनचर्या में शामिल करना आसान है। इस मौके पर साइकिल चालक शैलू प्रजापति का सम्मान शाल और फूल माला व तिलक लगाकर किया गया। केन्डु बाबा ने बताया कि शीलू प्रजापति के द्वारा सुबह 6 से दोपहर 12 बजे तक एवं दूसरे प्रहर में 4 बजे से शाम की 7 बजे तक घर हो या दुकान अखबार पहुंचाने का कार्य किया जाता है। लगभग 10 से 15 किलोमीटर शहर में साइकिल से यात्रा कर लोगों को समाचार पत्र पहुंचाने का कार्य विगत 23 वर्ष से कर रहा है। इस अवसर पर कृष्णा सोनी, सोहन राठौर, रामदयाल राठौर, राजू राठौड़, प्रकाश पवार, कमला प्रसाद पांडे, बाबा मकोड़े, सूर्य त्रिवेदी, शेषराव पवार, शकील खान, दिलीप गायकी, राकेश पटवा, अनिल पान कर आदि मौजूद थे।

जनसुनवाई में कटकुही की जयवंती को मिला न्याय, कलेक्टर ने चिचोली तहसीलदार को तत्काल सीमांकन कराए जाने के दिए निर्देश

बैतूल। कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने मंगलवार को कलेक्ट्रेट सभागार में प्रातः 11 बजे से आयोजित जनसुनवाई में नागरिकों की समस्याएं सुनीं। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने अनेक समस्याओं का निराकरण मौके पर ही किया। इस दौरान सभी विभागीय अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे। जनसुनवाई में कुल 171 आवेदन प्राप्त हुए। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने जनसुनवाई में प्राप्त आवेदनों का निराकरण समय सीमा में किए जाने के निर्देश संबंधित विभाग के अधिकारियों को दिए। जनसुनवाई में अधिकतम आवेदन राजस्व से संबंधित थे। इस दौरान कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने गुरुवार को मुलताई में राजस्व विभाग का शिविर आयोजित किए जाने के निर्देश दिए, ताकि शिविर के माध्यम से राजस्व संबंधी समस्याओं का निराकरण किया जा सके। जनसुनवाई में संयुक्त कलेक्टर मकसूद अहमद ने भी नागरिकों की समस्याएं सुनी। जनसुनवाई में चिचोली तहसील के ग्राम कटकुही निवासी जयवंती ने आवेदन के माध्यम से पटवारी द्वारा मशीन से सीमांकन कराए जाने की मांग की। प्राप्त आवेदन पर कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने चिचोली तहसीलदार को तत्काल सीमांकन कराए जाने के निर्देश दिए। इसके अलावा ग्राम आलमपुर निवासी सविता यादव ने खेत का गल्ला और गाय, भैंस हड़पने की शिकायत आवेदन के माध्यम से की। जिस पर कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने चिचोली तहसीलदार को प्रकरण का निराकरण किए जाने के निर्देश दिए। बैतूल तहसील के ग्राम मिलानपुर निवासी अशोक पांडे ने प्रधानमंत्री आवास योजना की किस्त का लाभ दिलाए जाने के लिए आवेदन दिया। प्राप्त आवेदन पर कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने संबंधित अधिकारी को प्रकरण का निराकरण किए जाने के निर्देश दिए। प्रभात पट्टन तहसील के ग्राम वायगांव निवासी महेश्वरी धोटे ने अवैध कब्जा हटाए जाने के लिए आवेदन दिया, जिस पर कलेक्टर से सूर्यवंशी ने तहसीलदार पट्टन को आवश्यक कार्रवाई कर कब्जा हटाए जाने के निर्देश दिए।

आर्थिक सहायता दिए जाने के निर्देश

आठनेर तहसील के ग्राम धामोरी निवासी श्रीमती कांताबाई रानिसरे ने मृत्यु उपरांत मिलने वाली आर्थिक सहायता के लिए आवेदन दिया, जिस पर कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने आठनेर तहसीलदार को प्रकरण का निराकरण कर तत्काल आर्थिक सहायता दिए जाने के निर्देश दिए। भैंसदेही तहसील के ग्राम कालडोंगरी निवासी बलदेव ने आवेदन के माध्यम से सीमांकन में हल्का पटवारी द्वारा सांठगांठ किए जाने की शिकायत की। प्राप्त आवेदन पर कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने भैंसदेही तहसीलदार को प्रकरण की जांच कर निराकरण के निर्देश दिए। ग्राम मोरखा निवासी संगीता धुर्वे द्वारा कब्जा दिलाए जाने के आवेदन पर कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने नायब तहसीलदार आमला को प्रकरण के निराकरण के निर्देश दिए।

आठनेर के सरकारी अस्पताल में आयोजित हुआ मोतियाबिंद जांच परामर्श एवं शिविर

मोतियाबिंद ऑपरेशन के बाद नहाते समय आंखों में गंदा पानी जाने से बचाएं: डॉ. शुभम शर्मा

बैतूल। युवा साहू समाज सेवा संगठन जिला बैतूल एवं चिरायु मेडिकल अस्पताल भोपाल के सहयोग से आठनेर के सरकारी अस्पताल में मोतियाबिंद जांच परामर्श एवं शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का शुभारंभ डॉ जीएस अर्गल, डॉ शुभम शर्मा, अभिषेक शुक्ला, गोपाल साहू, पिंकेश कुमार ने माता सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन एवं मालार्पण कर शिविर का शुभारंभ किया। इस अवसर पर अस्पताल के चिकित्सक डॉ शुभम शर्मा ने कहा कि मोतियाबिंद ऑपरेशन के बाद आंखों को संक्रमण से बचाने, सूजन कम करने और सही ढंग से ठीक होने के लिए कुछ सावधानियां बरतनी चाहिए इसके अंतर्गत ऑपरेशन के बाद आई ड्रॉप का इस्तेमाल डॉक्टर के बताए अनुसार करना चाहिए, आंखों को छूने या रगडऩे से बचना चाहिए और कुछ समय के लिए भारी सामान नहीं उठाना चाहिए। डॉक्टर द्वारा जो आई ड्रॉप का इस्तेमाल करने का तरीका बताया गया है

उसके अनुसार ही दवाइयां का प्रयोग आंखों में करना चाहिए। डॉ शुभम शर्मा ने बताया कि आंखों को छूने धकेलने या रगड़ने से बचना चाहिए इससे संक्रमण हो सकता है। तेज हवा वाले स्थान पर जाने से बचना चाहिए जहां धूल गंदगी आंखों में जा सकती है। मोतियाबिंद ऑपरेशन के बाद नहाते समय आपकी आंखों में गंदा पानी जाने से बचना चाहिए। आठनेर सरकारी अस्पताल के नेत्र चिकित्सा सहायक डॉ जी एस अर्गल ने कहा कि आंखों में मोतियाबिंद ऑपरेशन के बाद मोतियाबिंद सर्जरी की सही रिकवरी के लिए स्वस्थ आहार लेना बहुत जरूरी है । इसमें विटामिन और मिनरल से भरपूर हरी सब्जियां भोजन में इस्तेमाल करना जरूरी है। यदि आपको सर्जरी के बाद कोई दर्द या परेशानी होती है तो अपने आसपास के नजदीकी चिकित्सक या सरकारी अस्पताल केचिकित्सक को बताना चाहिए। धूम्रपान और शराब पीना ठीक नहीं है इससे आंखों की रिकवरी करने में परेशानी हो सकतीहै। मोतियाबिंद शिविर में 70 मरीजों की जांच की गई 30 मरीजों में मोतियाबिंद पाया गया सभी मरीजों के ऑपरेशन चिरायु मेडिकल अस्पताल भोपाल में किए जाएंगे।गोपाल साहू ने बताया कि युवा साहू समाज सेवा संगठन जिला बैतूल द्वारा बैतूल जिले के सभी 10 ब्लॉकों में संगठन की रजत जयंती के स्थापना के अवसर पर मोतियाबिंद शिविरों के आयोजन लगातार किए जाएंगे। संचालक अभिषेक शुक्ला ने किया आभार प्रदर्शन पिंकेश कुमार ने किया।

प्रदेश में इस माह तीन अनुसूचित जनजाति सम्मेलन होंगे : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

महिला सशक्तिकरण महासम्मेलन के सफल आयोजन के लिए मुख्यमंत्री डॉ. यादव को मंत्रि-परिषद के सभी सदस्यों ने दी बधाई

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि पचमढ़ी अभयारण्य को राजा भभूत सिंह पचमढ़ी अभयारण्य के नाम से जाना जाएगा। यह राजा भभूत सिंह के पर्यावरण प्रेम और पचमढ़ी को विदेशी ताकतों से संरक्षित रखने के आजीवन अथक प्रयासों को समर्पित है। अभयारण्य में राजा भभूत सिंह के जीवन, संघर्ष, वीरता और योगदान से संबंधित जानकारी को प्रदर्शित किया जाएगा। यह कदम न केवल स्थानीय गौरव को बढ़ावा देगा बल्कि अभयारण्य की पहचान को भी मजबूत करेगा। यह क्षेत्र के ऐतिहासिक और प्राकृतिक महत्व का प्रतीक बनेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव, पचमढ़ी में राजभवन में मंत्रि-परिषद की बैठक के पहले, मंत्रि-परिषद के सदस्यों को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राजा भभूत सिंह का आदिवासी समाज पर बहुत अधिक प्रभाव रहा है। उनकी वीरता के किस्से आज भी लोकमानस की चेतना में जीवंत हैं। राजा भभूत सिंह के योगदान को स्मरण करने के लिए मंत्रि-परिषद की बैठक पचमढ़ी में आयोजित की गई है। यह राजा भभूत सिंह के योगदान को समाज के सामने लाने का एक प्रयास है।

राजा भभूत सिंह का स्मरण करते हुए मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि राजा भभूत सिंह सन् 1857 में आजादी की लड़ाई में स्वतंत्रता संग्राम सेनानी तात्या टोपे के मुख्य सहयोगी थे। अपनी छापामार युद्ध नीति के कारण ही भभूत सिंह नर्मदांचल के शिवाजी कहलाते हैं। राजा भभूत सिंह को पकड़ने के लिए ही मद्रास इन्फेंट्री को बुलाना पड़ा था। राजा भभूत सिंह अपनी सेना के साथ 1860 तक लगातार अंग्रेजों से सशस्त्र संघर्ष करते रहे, अंग्रेज पराजित होते रहे। अंग्रेज दो साल के बाद राजा भभूत सिंह को गिरफ्तार कर पाए और अंग्रेजों ने 1860 में उन्हें फांसी दे दी।

राजा भभूतसिंह की वीरता और बलिदान को कोरकू समाज ने लोकगीतों और भजनों के माध्यम से जीवित रखा है। पचमढ़ी क्षेत्र के गाँवों, मंदिरों और लोक संस्कृति में आज भी उनकी गाथाएँ सुनाई जाती हैं। राजा भभूतसिंह न केवल एक योद्धा थे, बल्कि वे जनजातीय चेतना और आत्मसम्मान के प्रतीक बन चुके हैं। राजा भभूतसिंह की वीरगाथा, अंग्रेज अधिकारी एलियट की 1865 की सेटलमेंट रिपोर्ट में भी दर्ज है। राजा भभूतसिंह एक ऐसा नाम हैं, जो केवल कोरकू समाज का

नहीं, पूरे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का गौरव है। उनका जीवन आदिवासी अस्मिता, देशभक्ति, और आध्यात्मिक शक्ति का जीवंत उदाहरण है। राजा भभूत सिंह का जीवन अनुकरणीय है, उनके बलिदान और शौर्य की गाथा को राष्ट्रीय पटल पर लाना हम सभी का नैतिक कर्तव्य है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि इस माह जून में अनुसूचित जनजाति आधारित तीन सम्मेलन आयोजित किए जायेगे। डिण्डौरी के बजाग में 7 जून को बैगा सम्मेलन, बिरसा मुण्डा जन्म दिवस पर शहडोल के ब्यौहारी में 9 जून को कोल सम्मेलन और 18 जून को शिवपुरी के कोलारस में सहारिया सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के जन-कल्याणकारी कार्यकाल के 11 वर्ष पूर्ण होने पर पूरे प्रदेश में 9 जून से 21 जून तक कार्यक्रम आयोजित किए जायेगे। इसके साथ ही पूर्व प्रधानमंत्री और भारत रत्न श्री अटल बिहारी वायपेयी का जन्म शताब्दी वर्ष भी मनाया जाएगा। श्री वायपेयी का मध्यप्रदेश से गहरा नाता रहा है।

मुख्यमंत्री को दी बधाई और व्यक्त किया आभार- लोकमाता अहिल्याबाई की 300वीं जन्मशती पर 31 मई को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मुख्य आतिथ्य में 2 लाख महिलाओं के जम्बूरी मैदान, भोपाल में आयोजित महिला सशक्तिकरण महासम्मेलन के सफल आयोजन के लिए मुख्यमंत्री डॉ. यादव को मंत्रि-परिषद के सभी सदस्यों ने बधाई दी। मंत्रि-परिषद की महिला सदस्यों ने पुष्प गुच्छ भेंट कर प्रदेश की सभी महिलाओं की तरफ से मुख्यमंत्री डॉ. यादव का आभार भी व्यक्त किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि माह मई प्रदेश के लिए विकास की सौगात से भरा हुआ रहा है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने दतिया और सतना में नवीन एयरपोर्ट तथा इन्दौर में मेट्रो का लोकार्पण किया है। साथ ही 1271 अटल ग्राम सुशासन भवन निर्माण के लिए प्रथम किश्त की राशि जारी की। यह विकास के साथ जनकल्याण की ओर प्रदेश के बढ़ते कदम है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने नारी सशक्तिकरण पर म.प्र. सरकार के कार्यों की सराहना की है और लोकमाता अहिल्याबाई के सुशासन को स्मरण करते हुए हमें महिला सशक्तिकरण के लिए सतत प्रयास करने के लिए अपने आर्शीवचनों से उत्प्रेरित किया है। हमें प्रधानमंत्री श्री मोदी से प्रेरणा लेकर और उनके वचनों को सार्थक करने के लिए महिला सशक्तिकरण और जनकल्याण के सतत प्रयासों को और अधिक ऊर्जा के साथ क्रियान्वित किया जाएगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मंत्रि-परिषद को बताया कि खण्डवा जिले ने जल संचय करने में कीर्तिमान रचा है। देश में मध्यप्रदेश का मान बढ़ाया है। 'जल संचय-जन भागीदारी अभियान' अंतर्गत 1 अप्रैल 2024 से 31 मई 2025 की अवधि में जल संचयन के आधार पर खंडवा जिला देशभर में पहले नंबर पर है। राज्यों की श्रेणी में पूरे देश में मध्यप्रदेश ने चौथा स्थान प्राप्त किया है। यह पूरे प्रदेश के लिए गौरव का विषय है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में जल गंगा संवर्द्धन अभियान 30 अप्रैल से 30 जून तक चलाया जा रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने इस अवधि में मंत्रि-परिषद के सभी सदस्यों का अपने अपने क्षेत्र में जन भागीदारी के माध्यम से जल संरक्षण और संचयन के कार्यक्रमों में भागीदारी करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि सभी जन प्रतिनिधियों को जल संरक्षण और संचयन के प्रति आमजन को जागरूक करना चाहिए।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि 5 जून को उज्जैन में हेल्थ एण्ड वेलनेस समिट का आयोजन किया जा रहा है। समिट में योग, आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा, अध्यात्म और मानसिक स्वास्थ्य जैसे आयामों को केन्द्र में रखकर निवेश और सहयोग को प्रोत्साहित किया जाएगा। समिट में प्रमुख आध्यात्मिक संत, आयुष विशेषज्ञ, नीति निर्माता, वेलनेस टूरिज्म ऑपरेटर और राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय निवेशक भाग लेंगें। इस समिट का उद्देश्य मध्यप्रदेश को वैश्विक वेलनेस हब के रूप में स्थापित करना तथा उज्जैन को वेलनेस सेक्टर की प्रमुख केंद्रस्थली के रूप में अंतर्राष्ट्रीय पहचान दिलाना है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सिर्फ नर्मदा जल पर जीवन यापन करने वाले आध्यात्मिक संत दादा गुरु का स्मरण कर नमन किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव की अध्यक्षता में मंत्रि-परिषद की बैठक वंदे मातरम् के गान के साथ प्रारंभ हुई। बैठक के दौरान मंत्रि-परिषद के सदस्यों को सतपुड़ा अंचल के गौरवशाली अतीत, सभ्यता, समृद्ध संस्कृति और राजा भभूत सिंह पर केंद्रित फिल्म दिखाई गई। लोक निर्माण मंत्री और नर्मदापुरम के प्रभारी मंत्री श्री राकेश सिंह और स्कूल शिक्षा एवं परिवहन मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह ने मुख्यमंत्री डॉ. यादव और मंत्रि-परिषद के सदस्यों का पुष्पगुच्छ, अंगवस्त्र और कोरकू समाज का प्रतीक चिन्ह देकर स्वागत किया। मंत्रि-परिषद की बैठक का समापन राष्ट्रगान जन-गण-मन के गान के साथ हुआ।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में मंगलवार को जनजातीय पराक्रमी राजा भभूत सिंह के सम्मान में हुई मंत्रिपरिषद की बैठक के बाद राजभवन पचमढ़ी में समूह फोटो।

एम्स भोपाल और पतंजलि रिसर्च फाउंडेशन ट्रस्ट के मध्य हुआ समझौता ज्ञापन

संयुक्त स्वास्थ्य अनुसंधान एवं नवाचार को मिलेगा नया आयाम

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के मार्गदर्शन में भारतीय चिकित्सा पद्धति को वैज्ञानिक आधार पर स्थापित करने की दिशा में एक ऐतिहासिक पहल करते हुए, एम्स भोपाल एवं पतंजलि रिसर्च फाउंडेशन ट्रस्ट के मध्य एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। यह समझौता आधुनिक एलोपैथिक चिकित्सा और प्राचीन आयुर्वेदिक ज्ञान के समन्वय से संयुक्त अनुसंधान, शिक्षा एवं नवाचार को बढ़ावा देगा, साथ ही रोगियों को समग्र एवं प्रभावी स्वास्थ्य समाधान उपलब्ध कराएगा। समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर के अवसर पर पतंजलि अनुसंधान संस्थान की ओर से प्रधान वैज्ञानिक डॉ. अनुराग वार्ष्णेय उपस्थित रहे। इस साझेदारी के अंतर्गत फैटी लिवर, एलर्जी, जीवनशैली संबंधी रोग, यकृत विकार, श्वसन तंत्र की समस्याएँ, गुर्दा रोग तथा न्यूरोलॉजिकल विकारों पर संयुक्त अनुसंधान किया जाएगा। इसी क्रम में पतंजलि द्वारा विकसित साक्ष्य-आधारित आयुर्वेदिक औषधियों लिवोग्रिट एवं ब्रोंकोम के क्लीनिकल कंट्रोल ट्रायल्स पर भी गहन विचार-विमर्श हुआ। इस अवसर पर प्रो. (डॉ.) अजय सिंह ने कहा कि यह समझौता आधुनिक चिकित्सा विज्ञान और पारंपरिक भारतीय ज्ञान के समन्वय से रोगियों को अधिक प्रभावी, सुलभ और समग्र स्वास्थ्य समाधान प्रदान करने की दिशा में एक नई शुरुआत है। साथ ही उन्होंने बताया कि पतंजलि रिसर्च फाउंडेशन ट्रस्ट द्वारा एम्स भोपाल परिसर में मध्यप्रदेश का सबसे बड़ा हर्बल गार्डन स्थापित किया जाएगा। यह गार्डन अनुसंधान एवं शैक्षणिक उपयोग की व्यापक संभावनाओं को समाहित करेगा। डॉ. अनुराग वार्ष्णेय ने कहा कि परम पूज्य स्वामी रामदेव जी के आशीर्वाद और परम श्रद्धेय आचार्य बालकृष्ण जी की प्रेरणा से पतंजलि आयुर्वेद की प्रमाणिकता को वैश्विक मंच पर स्थापित करने की दिशा में यह साझेदारी एक महत्वपूर्ण कदम है। कार्यक्रम में प्रमुख भूमिका निभाते हुए प्रो. (डॉ.) अशोक कुमार ने इसे चिकित्सा के क्षेत्र में भारत को आत्मनिर्भर और अधिक सशक्त बनाने की दिशा में एक मील का पत्थर बताया। उन्होंने कहा कि यह पहल आधुनिकता और प्राचीनता के समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण बनेगी। इस अवसर पर एम्स भोपाल की ओर से डीन (रिसर्च) प्रो. (डॉ.) रेहान-उल-हक, डीन (अकादमिक) प्रो. (डॉ.) रजनीश जोशी, प्रो. (डॉ.) अशोक कुमार सहित अनेक वरिष्ठ अधिकारी एवं वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री आज दिव्यांगजनों को वितरित करेंगे हितलाभ

लोकनिर्माण विभाग के लिए चयनित अभ्यर्थियों को सौंपेंगे नियुक्ति-पत्र

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव बुधवार 4 जून को पं. खुशीलाल शर्मा शासकीय आयुर्वेद महाविद्यालय के रजत जयंती ऑडिटोरियम में आयोजित सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण कार्यक्रम में दिव्यांगजनों को हितलाभ वितरित करेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव इस अवसर पर लोक-निर्माण विभाग में चयनित दिव्यांगजनों को नियुक्ति पत्र भी सौंपेंगे। मुख्यमंत्री पात्र हितग्राहियों को सहायता उपकरणों का वितरण करेंगे, साथ ही उन्हें दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016 के तहत प्रदत्त सुविधाओं की जानकारी देंगे। इस अवसर पर लोक निर्माण मंत्री श्री राकेश सिंह, सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण मंत्री श्री नारायण सिंह कुशवाह, भोपाल सांसद श्री आलोक शर्मा, भोपाल महापौर श्रीमती मालती राय, तथा भोपाल दक्षिण-पश्चिम क्षेत्र के विधायक श्री भगवानदास सबनानी सहित कई जनप्रतिनिधि व अधिकारीगण उपस्थित रहेंगे।

विश्व साइकिल दिवस पर एम्स भोपाल में जन-जागरूकता का आयोजन

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के मार्गदर्शन में आज संस्थान में 'विश्व साइकिल दिवस' को उत्साह और सक्रिय सहभागिता के साथ मनाया गया। यह दिवस प्रतिवर्ष 3 जून को मनाया जाता है, जिसका उद्देश्य साइकिल को केवल एक साधारण परिवहन साधन के रूप में महत्व देना नहीं है, बल्कि यह मानव स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास के प्रति जागरूकता बढ़ाने पर भी बल देता है। इस अवसर पर एम्स भोपाल द्वारा एक जन-जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें फैकल्टी सदस्यों, रेजिडेंट डॉक्टरों, नर्सिंग अधिकारियों, कर्मचारियों और छात्रों

ने भाग लिया। प्रतिभागियों ने साइकिल चलाने के लाभों पर चर्चा कर न केवल स्वस्थ जीवनशैली को अपनाने का संदेश दिया, बल्कि पर्यावरण-संरक्षण के महत्व पर भी प्रकाश डाला। यह उल्लेखनीय है कि साइकिल चलाना महज़ एक व्यायाम नहीं, बल्कि एक ऐसी जीवनशैली है जो शरीर को सक्रिय बनाए रखने के साथ-साथ मोटापा, हृदय रोग, कैंसर, मधुमेह, मानसिक तनाव और गठिया जैसी गंभीर बीमारियों से बचाव में सहायक सिद्ध होती है। इसके साथ ही, नियमित रूप से साइकिल चलाने से न केवल शारीरिक क्षमता में वृद्धि होती है, बल्कि यह पर्यावरणीय प्रदूषण को कम करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

इस अवसर पर प्रो. (डॉ.) अजय सिंह ने कहा, विश्व साइकिल दिवस हमें यह स्मरण कराता है कि स्वास्थ्यवर्धक जीवनशैली अपनाना वर्तमान समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। साइकिल चलाना एक किफायती, सुलभ और पर्यावरण-अनुकूल परिवहन माध्यम होने के साथ-साथ शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाए रखने का प्रभावशाली उपाय भी है। एम्स भोपाल का यह निरंतर प्रयास है कि हम स्वस्थ भारत के निर्माण में समाज को जागरूक करें तथा इस प्रकार की गतिविधियों के माध्यम से सकारात्मक परिवर्तन लाएं।

एम्स डायरेक्टर की फर्जी आईडी बनाकर पैसे की मांग

बीते 24 घंटे में बनी 3 फर्जी आईडी, संस्थान ने जारी किया अलर्ट

साइबर ठगों ने अब सीधे-सादे लोगों को लूटने के लिए नया तरीका निकाला है। भोपाल के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) के कार्यपालक निदेशक प्रोफेसर (डॉ.) अजय सिंह की फर्जी सोशल मीडिया आईडी बनाकर लोगों से पैसे मांगने का मामला सामने आया है। इस घटना के बाद एम्स भोपाल ने तुरंत एक अलर्ट जारी किया है और आम जनता को ऐसे फ्रॉड से सावधान रहने की अपील की है। जानकारी के अनुसार बीते 24 घंटे में 3 फर्जी फेसबुक आईडी बनाई गई हैं। पहले लोगों को फ्रेंड रिक्वेस्ट भेजी जा रही है। इसके बाद उनसे अलग-अलग बहाने से पैसे की डिमांड की जा रही है।

प्रबंधन ने जारी किया अलर्ट- एम्स भोपाल द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति में बताया है कि आजकल साइबर अपराध तेजी से बढ़ रहे हैं, खासकर सोशल मीडिया के जरिए होने वाली ठगी। असामाजिक तत्व फर्जी सोशल मीडिया प्रोफाइल बनाकर लोगों को गुमराह कर रहे हैं और उनसे पैसे मांग रहे हैं। ऐसे ही गलत उद्देश्य वाले लोगों द्वारा एम्स के निदेशक की बार-बार फेक आईडी बनाई जा रही है। उन्होंने कहा कि साइबर सुरक्षा अब सिर्फ तकनीकी समस्या नहीं है, बल्कि यह हर नागरिक की जिम्मेदारी बन चुकी है। आम लोग सोशल मीडिया पर किसी भी संदिग्ध प्रोफाइल से सतर्क रहें और बिना पूरी जांच-पड़ताल किए किसी भी तरह का पैसों का लेन-देन न करें। ठग सिर्फ पैसों के लिए ही नहीं, बल्कि भावनात्मक और सामाजिक रिश्तों का भी गलत फायदा उठा रहे हैं। किसी भी प्रोफाइल पर तब तक विश्वास न करें, जब तक उसकी सच्चाई की पुष्टि न हो जाए।

किसानों के खेत तक पहुंचने का रास्ता हुआ बंद, किसानों की बढ़ी मुश्किल

बैतूल। भैसदेही तहसील के बोथिया गांव में एक शिक्षक द्वारा ग्राम की सडक़ को अवैध रूप से खोदकर बंद कर दिए जाने और मिट्टी-मुरम डालकर नदी तथा कुओं को पाट देने का गंभीर मामला सामने आया है। इससे आवेदक किसानों को खेतों तक पहुंचने में दिक्कत हो रही है, वहीं जलप्रवाह बाधित होने से उनकी फसलें भी बर्बाद हो रही हैं। आवेदकों ने जनसुनवाई में भैंसदेही अनुविभागीय अधिकारी से शिकायत कर कार्रवाई की मांग की है। शिकायतकर्ता किसानों ने शिक्षक बाबूलाल आठोले के खिलाफ दबंगई के आरोप लगाए। शिकायत आवेदन के अनुसार ग्राम बोथिया के रहवासी कलमी आठोले, सायुबु आठोले सहित समस्त ग्रामवासी कृषकों ने अनुविभागीय अधिकारी को आवेदन देकर शिकायत में आरोप लगाया कि गांव के ही पेशे से शिक्षक बाबूलाल आठोले, रामरती आठोले, कमलेश आठोले और पवन आठोले ने गांव की सार्वजनिक सडक़ को खोद डाला है। शिकायत में बताया गया कि अनावेदकों ने बोथिया स्थित खसरा नंबर 35/1 में भूमि खरीदी है, जो ग्रामीण सडक़ से लगी हुई है। इन लोगों ने खुदाई कर सडक़ को पूरी तरह से अवरुद्ध कर दिया और मिट्टी-मुरम को नागाझिरी नदी और आवेदकों के कुओं में डाल दिया। इससे नदी का प्राकृतिक प्रवाह रुक गया और पानी पड़ोसी किसानों की जमीन में भरने लगा, जिससे खेतों की मिट्टी बह गई, उर्वरक क्षमता नष्ट हो गई और खेतों में जलजमाव होने लगा। इससे खेती करना मुश्किल हो गया है और किसानों को आर्थिक नुकसान हो रहा है। इसके अलावा, नदी का पानी आगे जाकर पशु डेम तक पहुंचता था, जहां से मवेशियों को पानी मिलता था, लेकिन अब वह पानी नहीं पहुंच पा रहा है। बताया गया कि अनावेदकों ने पशु डेम में भी मुरम डालकर समतल कर दिया है। सबसे गंभीर बात यह है कि आवेदकगण के कुएं को भी आधा भर दिया गया है, जिससे उन्हें कुआं फिर से साफ करवाने में भारी खर्च उठाना पड़ेगा।

प्रख्यात लेखिका मालती जोशी स्मृति समारोह आज से इंदौर में

भोपाल/इंदौर। पद्मश्री से अलंकृत प्रख्यात कथा लेखिका श्रीमती मालती जोशी की स्मृति में दो दिवसीय साहित्य का आयोजन 4 और 5 जून को इंदौर में किया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि मालती जोशी का निधन पिछले वर्ष 15 मई को नब्बे वर्ष की आयु में हुआ था। इस वर्ष 4 जून को उनके जन्मदिन पर आयोजित इस कार्यक्रम में मालती जोशी के कथा साहित्य के विभिन्न आयामों पर प्रस्तुतियां होगी।

इंदौर के जाल सभागृह में 4 जून से प्रारंभ होने वाले इस आयोजन का शुभारंभ पूर्व लोकसभा अध्यक्ष सुमित्रा ताई महाजन करेंगी। प्रख्यात साहित्यकार प्रोफेसर सरोज कुमार तथा डॉ सूर्यकांत नागर भी इस अवसर पर उपस्थित रहेगें। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. कुमुद शर्मा विशिष्ट अतिथि होगीं।

5 जून को संचार विशेषज्ञ प्रो. संजय दिवेदी, मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी के निदेशक विकास दवे, लेखिका निर्मला भुराड़िया तथा ज्योति जैन उपस्थित होंगी। इस दो दिवसीय आयोजन में अनीता सक्सेना, अमिता त्रिवेदी, संजय पटेल, अर्चना मंडलोई, मिलिंद देशपांडे तथा संतोष मोहन्ती, मालती जोशी की कहानियों का पाठ करेगें। प्रख्यात रंगकर्मी श्रीराम जोग तथा विवेक सावरीकर के निर्देशन में मालती जी की कहानियों का मंचन होगा।

श्रीमति मालती जोशी का इंदौर से गहरा संबंध रहा है। मालती जोशी पर केन्द्रित ग्रंथ 'स्मृति कल्प' का लोकार्पण भी इस अवसर पर होगा तथा उन पर केन्द्रित एक प्रदर्शनी भी लगायी जायेगी। स्मृति कल्प का यह आयोजन उनके परिवार द्वारा किया जा रहा है तथा उनके पुत्र ऋषिकेश जोशी तथा सच्चिदानंद जोशी इस कार्यक्रम के आयोजक हैं।

भोपाल स्टेशन पर मिला गहनों से भरा लावारिस ट्राली बैग

मंगलसूत्र, पायल सहित 2 लाख रुपए का था सामान, आरपीएफ ने लौटाया

भोपाल। रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) की सतर्कता और 'ऑपरेशन अमानत' की प्रभावशीलता एक बार फिर देखने को मिली, जब भोपाल रेलवे स्टेशन से मिला करीब दो लाख रुपए मूल्य का बहुमूल्य सामान यात्री को लौटाया गया। रेल प्रशासन द्वारा यात्रियों की सुरक्षा और सुविधा के लिए चलाए जा रहे 'ऑपरेशन अमानत' के अंतर्गत भोपाल स्टेशन पर आरपीएफ ने लावारिस हालत में मिले ट्रॉली बैग को उसके असली मालिक तक पहुंचाया। रेसुब पोस्ट भोपाल के आरक्षक आर. मधुसूदन जब प्लेटफार्म क्रमांक-2 के पोल नंबर-7 के पास ड्यूटी पर तैनात थे, तभी उन्हें एक कत्थई रंग का ट्रॉली सूटकेस लावारिस स्थिति में दिखाई दिया। आसपास पूछताछ करने पर किसी भी यात्री ने उस सूटकेस पर दावा नहीं किया। इसके बाद नियमों के तहत सूटकेस को खोलकर जांच की गई, जिसमें चांदी की पायल, बिछिया, कमरबंद, झुमका, सोने का मंगलसूत्र, एक वीवो मोबाइल, एक कैमरा स्टैंड और कुछ कपड़े मिले। सामान की कुल कीमत करीब दो लाख रुपए आंकी गई। वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक सौरभ कटारिया ने बताया कि सूटकेस को रेसुब पोस्ट लाकर रेल मदद एप पर दर्ज शिकायतों से मिलान किया गया, जहां बरखेड़ा, भोपाल निवासी रविंद्र गोस्वामी की शिकायत दर्ज पाई गई। उन्होंने ट्रेन संख्या 22146 एक्सप्रेस से यात्रा के दौरान सूटकेस के गुम हो जाने की सूचना एप पर दी थी। शिकायत की पुष्टि होने पर रविंद्र गोस्वामी को बुलाया गया, उनके संबंधी दिनेश गोस्वामी आधार कार्ड सहित आरपीएफ पोस्ट पहुंचे।

'विकसित कृषि संकल्प अभियान' के छठे दिन शिवराज सिंह चौहान महाराष्ट्र पहुंचे

छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रेरणा से हम किसानों की सेवा के लिए तत्पर हैं: शिवराज सिंह

नईदिल्ली। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने आज महाराष्ट्र के पुणे स्थित, नारायणगांव, कृषि विज्ञान केंद्र से 'विकसित कृषि संकल्प अभियान' का आगे बढ़ाते हुए, किसानों से संवाद किया। इस अवसर पर महाराष्ट्र के कृषि मंत्री श्री माणिकराव शिवाजीराव कोकाटे सहित, अधिकारीगण, वैज्ञानिक और बड़ी संख्या में किसान उपस्थित रहें। पहले दिन ओडिशा से शुरुआत के बाद, जम्मू, हरियाणा, उत्तर-प्रदेश, बिहार के बाद आज कृषि मंत्री महाराष्ट्र के किसानों से मिले है। अन्य राज्यों की तरह ही महाराष्ट्र में भी अभियान को लेकर किसानों के बीच भारी उत्साह दिखा।

इस अवसर पर संबोधित करते हुए श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि सबसे पहले मैं छत्रपति शिवाजी महाराज के चरणों में प्रणाम करता हूं। कामना करता हूं कि वह हमें सदमार्ग पर चलने की प्रेरणा दें, जिससे हम अपने किसानों की सेवा कर सकें। केंद्रीय कृषि मंत्री ने कहा कि जब-तक कृषि मंत्री, कृषि विभाग व वैज्ञानिक खेतों तक नहीं पहुंचेंगे, खेती को सही दिशा नहीं मिल सकती। व्यावहारिक समस्याओं का समझे बिना मात्र कागज पर योजनाएं बनाने का कोई अर्थ नहीं है।

श्री शिवराज सिंह ने कहा कि आज मैंने शिमला मिर्च की खेती, केले की खेती, मूंगफली की खेती देखी वहां उत्पादन से लेकर उनके बाजार तक पहुंच की प्रक्रिया को समझा। वैज्ञानिकों की टीम के साथ टमाटरके खेत में भी गया, वायरस अटैक के कारण टमाटर की खेती पर जो विपरीत प्रभाव पड़ा,उसकी जानकारी भी ली।

श्री चौहान ने कहा प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के विकसित भारत के संकल्प की पूर्ति की दिशा में आगे बढ़ने के लिए ही'विकसित कृषि संकल्प अभियान' की

शुरुआत की गई है। जब-तक लैब और लैंड साथ नहीं जुड़ेंगे तब-तक कृषि का संपूर्ण विकास नहीं हो सकता। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए विकसित कृषि संकल्प अभियान की 29 मई को ओडिशा से शुरुआत हुई।उन्होंने कहा कि ओडिशा से शुरुआत के बाद, मैं जम्मू गया, हरियाणा गया, उत्तर-प्रदेश गया, बिहार गया। आज मैं महाराष्ट्र आया हूं और आगे पूरे देश की परिक्रमा कर किसान भाई-बहनों से संवाद करूंगा।सभी राज्यों व क्षेत्रों की खेती की आवश्यकताएं, जरूरतें व चुनौतियां अलग-अलग है, जिसे गंभीरता से समझना होगा। श्री चौहान ने कहा कि जब से मैं कृषि मंत्री बना हूं, मेरे रोम-रोम में किसान और हर सांस में खेती है, मैं खेती जीने की कोशिश कर रहा हूं।

श्री चौहान ने कहा कि मुझे यह देखकर प्रसन्नता होती है कि महाराष्ट्र के किसान प्रगतिशील है। उन्होंने खुद से अनुसंधान कर खेती में उन्नति के मार्ग सुनिश्चित किए हैं। हमारे अंगूर और केले आज विदेशों में निर्यात हो रहे हैं। श्री चौहान ने कहा कि हमें जलवायु परिवर्तन की चुनौती को ध्यान में रखते हुए अब नई किस्में विकसित करनी पड़ेंगी।

श्री चौहान ने वैज्ञानिकों को बढ़ते तापमान और असमय बारिश के कारण फसलों पर जो विपरीत प्रभाव पड़ता है, उससे निपटने के लिए मार्ग प्रशस्त करने का निर्देश दिया। टमाटर की नई किस्में जो अधिक तापमान प्रभाव में भी उत्पादन कर सके, ऐसी किस्मों की जानकारी किसानों तक पहुंचाने को कहा।

श्री चौहान ने कीटनाशकों और उर्वरकों के सही व संतुलित उपयोग को लेकर भी चर्चा की। साथ ही कहा कि सरकारनकली कीटनाशकों और उर्वरकों पर रोक के लिए कड़ा कानून बनाने की दिशा में भी अग्रसर है। जो भी कंपनियां या लोग नकली उर्वरक या कीटनाशक बनाते हुए पकड़े जाएंगे, उन्हें खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई की जाएगी।

श्री शिवराज सिंह चौहान नेबाजार हस्तक्षेप योजना (एमआईएस) के अंतर्गत आलू, प्याज और टमाटर के संबंध में केंद्र की नई योजना की भी जानकारी दी। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि अगर आलू, प्याज और टमाटर का उत्पादन करने वाले किसानों को अपने क्षेत्र की तुलना में उन राज्यों में जहां उन्हें अधिक दाम मिल रहा है तो ऐसी स्थिति में परिवहन में होने वाली परिचालन लागत का खर्चा केंद्र सरकार उठाएगी। ऐसा तालमेल करने से किसानों को भी उचित दाम मिल जाएगा और जिस क्षेत्र में दाम अधिक है वहां उत्पादन पहुंचने से दाम भी संतुलित हो जाएंगे।

श्री चौहान ने टमाटर और अंगूर की अधिक सेल्फ लाइफ वाली किस्म विकसित करने और प्रोसेसिंग की दिशा में शोध के लिए भी वैज्ञानिकों को निर्देश दिए। साथ ही साथ सोयाबीन के उत्पादन में भी नए प्रयोग करने की बात कही।

अंत में श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि को निर्देश दिया की दिशा में भीप्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में कृषि की उन्नति के लिए तेजी से काम हो रहा है, लेकिन और अधिक सम्मिलित प्रयासों की आवश्यकता है। इसलिए नए नवाचारों को अपनाने के साथ ही विज्ञान और कृषि को जोड़ने के लिए ही 'विकसित कृषि संकल्प अभियान' शुरू किया गया है। इस अभियान की समाप्ति के बाद क्षेत्रवार रोडमैप तैयार किया जाएगा और केंद्र वराज्य सरकार मिलकर खेती को आगे बढ़ाएंगी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बॉम्बे ग्रीन और मणि प्रभा किस्म का स्वाद चख कर 'आम महोत्सव' का किया शुभारंभ

आम प्रदर्शनी में 34 किस्म के आम के स्टॉल लगाए गए

सभी मंत्रियों ने आम का रसास्वादन किया

भोपाल/पचमढ़ी (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मंगलवार को पचमढ़ी के राज भवन परिसर में 'आम महोत्सव' का शुभारंभ किया। इस अवसर पर उन्होंने मणि प्रभा एवं बॉम्बे ग्रीन किस्म के आम का स्वाद भी लिया। आम का रसास्वादन कर मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने आम की मिठास और स्वाद की सराहना की। उन्होंने प्रदर्शनी में लाए गए देशी आम भी चखे। प्रदर्शनी में जम्बो केसर, सुंदरजा, कृष्ण भोग, लंगड़ा आम, गजरिया, मालदा आदि किस्मों की सराहना की। इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री श्री जगदीश देवड़ा एवं श्री राजेंद्र शुक्ला के साथ-साथ लोक निर्माण मंत्री एवं नर्मदापुरम जिले के प्रभारी मंत्री श्री राकेश सिंह और मंत्रीगण ने भी आम का स्वाद चखा और आम की विभिन्न किस्मों की सराहना की। इस अवसर पर नरसिंहपुर के किसान श्री विजय पाल सिंह ने आम की विभिन्न किस्मो की टोकरी मुख्यमंत्री डॉ. यादव को भेंट की। आम उत्पादक किसान श्री सुभाष पटेल ने मुख्यमंत्री डॉ यादव को 'यथार्थ गीता' पुस्तिका भेंट की।

मंत्री कुशवाह ने लिया जायजा

मध्यप्रदेश के सुरम्य पर्यटन स्थल पचमढ़ी में दो दिवसीय आम महोत्सव का सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण, उद्यानिकी तथा खाद्य प्रसंस्करण मंत्री श्री नारायण सिंह कुशवाह ने भी जायजा लिया।

इस विशेष आयोजन में आम 300 से अधिक नमूने प्रदर्शन के लिए रखे गए हैं, जो कृषकों, आमजन और पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बने हुए हैं। महोत्सव 4 जून 2025 तक चलेगा और इसका उद्देश्य आम की विविधता को प्रोत्साहित करना, प्रगतिशील कृषकों को मंच देना तथा आम आधारित उद्यानिकी और प्रसंस्करण को बढ़ावा देना है।

आम प्रदर्शनी में इन किस्मों का प्रदर्शन किया गया

मंगलवार को राजभवन पचमढ़ी में आयोजित 'आम महोत्सव' में जिन किस्मो का प्रदर्शन किया गया उनमें आम्रपाली, लंगड़ा, दशहरी, चौसा, तोता परी, फ़ाज़ली, बंगाल पाली, तुर्रापर, शुकर गुठली, मिश्री, हापुस, स्वर्णप्रभा, काला पहाड़, हिमसागर, स्वर्णरेखा, रत्ना, केसर, रुक्मणी, साबनिया, नीलम, सिंधु, जहांगीर, प्यारी, रॉयल मिस्री, जर्दालू,

आज रीवा दौरे पर रहेंगे सीएम मोहन यादव

गंगेव में जनसभा करेंगे, विधायक बोले- कन्या महाविद्यालय और पॉलीटेक्निक कॉलेज की मांग रखेंगे

रीवा (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 4 जून को रीवा जिले के मनगवां विधानसभा क्षेत्र के दौरे पर रहेंगे। वे दोपहर 2 बजे गंगेव स्टेडियम पहुंचेंगे और जनसभा को संबोधित करेंगे। इस दौरान वे करोड़ों रुपए के विकास कार्यों का लोकार्पण और भूमिपूजन भी करेंगे।

सीएम जिन कार्यों का लोकार्पण और भूमिपूजन करेंगे, उनमें शामिल हैं-

- हिनौती गौधाम परियोजना
- मनगवां अस्पताल, गंगेव का नवीन अस्पताल
- ओवरब्रिज, रपटा और पुलिया
- गढ़, रघुनाथगंज, रामपुर, लालगांव, कोलहई, हर्दीकला, बेलवा पैकान में उप स्वास्थ्य केंद्र
- ग्राम पंचायत भवन, सामुदायिक भवन और ग्रेवल सड़कें

प्रमुख सचिव पर्यावरण नवनीत मोहन कोठारी ने प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड में विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून की तैयारियों की समीक्षा की।

राहुल ने जूते उतारे बगैर इंदिरा गांधी को दी श्रद्धांजलि

मुख्यमंत्री ने कहा- ये तरीका नहीं जंचा, वीडी बोले-अपने ही पूर्वजों के प्रति श्रद्धा नहीं

भोपाल (नप्र)। वरिष्ठ कांग्रेस नेता और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी द्वारा भोपाल में दादी (पूर्व प्रधानमंत्री) इंदिरा गांधी को जूते पहने हुए ही श्रद्धांजलि देने के मामले ने तूल पकड़ लिया है। इस मामले में भाजपा आक्रामक हो गई है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा ने ट्वीट कर श्रद्धांजलि देने के इस तरीके पर सवाल उठाए हैं, तो कांग्रेस नेता पीयूष बबेले ने बचाव किया है। राहुल ने जूते पहले हुए ही गुलाब की पंखुड़ियां उठाई और तस्वीर के आगे फेंक दीं।

मुख्यमंत्री- ये हमारे संस्कार नहीं

मुख्यमंत्री ने कहा कि राहुल गांधी का अपनी दादी को श्रद्धांजलि देने का तरीका मुझे जचा नहीं। ये हमारे संस्कार नहीं हैं। उन्हें इस बात का ध्यान रखना चाहिए। क्योंकि हमारी संस्कृति में ये संवेदना है। उन्होंने मीडिया के सवाल पर कहा कि वे (राहुल गांधी) मध्य प्रदेश आए हैं अपना काम करें, लेकिन उनके आने से कोई फर्क पड़ने वाला नहीं है।

उनकी सोच और संस्कार साफ नजर आ रहे : वीडी शर्मा

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा ने भी राहुल पर निशाना साधा है। उन्होंने एक्स पर लिखा कि जूते पहने हुए ही राहुल गांधी ने अपनी दादी इंदिरा गांधी को पुष्पांजलि अर्पित की, इससे उनकी सोच और संस्कार साफ नजर आ रहे हैं। जिसमें अपने पूर्वजों के प्रति श्रद्धा नहीं है, भारत की संस्कृति की जानकारी नहीं है। ऐसे व्यक्ति को कांग्रेस प्रधानमंत्री बनाने के सपने देख रही है।

राहुल जी के कद का अंदाजा हो गया : बबेले

उधर कांग्रेस नेता पीयूष बबेले पर भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा पर निशाना साधा है। उन्होंने एक्स पर लिखा है कि भाजपा वालों को राहुल जी के कद का अंदाजा हो गया है। इसीलिए वीडी शर्मा जी नजरें झुकाकर राहुल जी के जूतों तक ही देख पा रहे हैं। उन्होंने लिखा कि शर्मा जी आप मध्य प्रदेश की वीरांगना बेटी को आतंकवादी की बहन कहने वाले पर तो कार्यवाही कर नहीं सके, दूसरों पर उंगली उठाने से पहले अपने संगठन के संस्कार देखें।

सबके साथ आगे बढ़ता
जनजातीय समाज

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

राज्य स्तरीय
पेसा महासम्मेलन

मुख्य अतिथि
डॉ. मोहन यादव
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

4 जून 2025 । अपराह्न 1:00 बजे
पाली ब्लॉक, जिला उमरिया

पेसा अधिनियम के माध्यम से पूर्ण हो रहा है
पंचायती राज संस्थाओं एवं आदिवासी क्षेत्रों की
ग्राम सभाओं के सशक्तिकरण का उद्देश्य

- गांव की जमीन और वन क्षेत्र के दस्तावेज बिना तहसील कार्यालय जाये सीधे पटवारी और बीटगार्ड से हो रहे हैं प्राप्त
- भू-अर्जन, खनिज सर्वे, पट्टा और नीलामी हेतु अनिवार्य है ग्राम सभा की सहमति और अनुशंसा
- लघु वनोपज एवं तेंदूपत्ता के संग्रहण और विपणन का अधिकार मिलने से अब जनजातीय समुदाय स्वयं तय करता है अपनी लघु वनोपज का मूल्य
- जलाशयों में मछली पालन एवं सिंघाड़ा उत्पादन का अधिकार मिलने से आमदनी में हो रही है वृद्धि
- सार्वजनिक स्थानों पर शराब को प्रतिबंधित करने एवं अवैध बिक्री रोकने का अधिकार अब ग्राम सभा के पास
- गलत तरीके से आदिवासियों की जमीन खरीदने या कब्जा करने पर ग्राम सभा का हस्तक्षेप। नहीं हो सकता अब उनके साथ छल-कपट

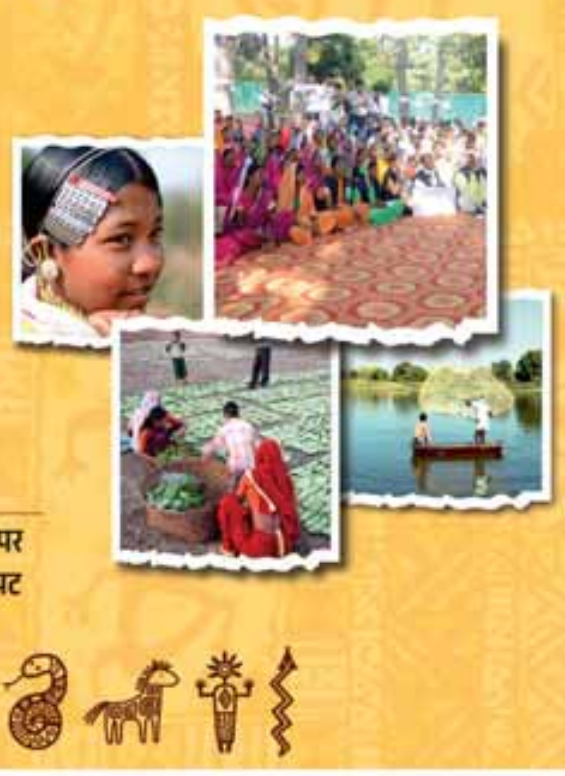

D-11037/25 सीधा प्रसारण webcast.gov.in/mp/cmevents @Cmmadhyapradesh @jansampark.madhyapradesh @Cmmadhyapradesh @jansamparkMP JansamparkMP
आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2025
मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी